दैनिक

पुष्पांजली टुडे

नई सोच नई पहल

वर्ष 03 : अंक : 301 | ग्वालियर , सोमवार 07 दिसम्बर 2020 | pushpanjalitoday@gmail.com | मूल्य : 01, रुपए, पृष्ठ 8

न्यूज ट्रैक

एक तरफ निहंग तो दूसरी ओर आरएएफ सुरक्षाबल!

नई दिल्ली। 11 दिन और अब तक 11 घंटे की बातचीत के बाद भी नतीजा कुछ भी नहीं निकला. नए कृषि कानून के खिलाफ किसानों का प्रदर्शन आज भी जारी है. दिल्ली बॉर्डर पर देश भर से आये किसान डटे हुए हैं. कल सरकार के साथ किसानों की पांचवी बैठक भी फेल रही, इसलिए किसान 8 दिसंबर को भारत बंद की तैयारियों में जुट गए हैं. दिल्ली बॉर्डर पर सुरक्षा के सख्त इंतजाम किये गए हैं, बैरिकेड के तरफ निहंग सरदार हैं जो किसानों के सुरक्षा कवच हैं और दूसरी तरफ आरएएफ की टीम जिनका मकसद है किसानों को दिल्ली के अंदर घुसने से रोकना. देखें ग्राउंड रिपोर्ट.

विजयवर्गीय बोले- बंगाल में दुर्गा पूजा मुश्किल, मुहर्रम आसान

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल के बीजेपी प्रभारी कैलाश वियवर्गीय ने ममता बनर्जी पर निशाना साधा है. उन्होंने ममता बनर्जी को तुष्टिकरण की राजनीति और 30 प्रतिशत लोगों का संरक्षण करने वाली बताया है. विजयवर्गीय ने कहा कि बंगाल में दुर्गा पूजा मनाना मुश्किल है, लेकिन मुहर्रम आसान है. इससे पहले विजयवर्गीय ने बंगाल की मुख्यमंत्री पर आरोप लगाते हुए कहा था कि ममता बनर्जी मौलवियों को 5 हजार रूपये महीने भत्ता देती हैं, वहीं पूजारियों को केवल एक हजार.

योगी सरकार में कैबिनेट मंत्री बोले- अपराधी कुत्ते की तरह होता है, भागेंगे तो दौड़ाएगा और रुक जाएंगे तो पूछ हिलाएगा

गोपीगंज(भदोही)। योगी सरकार में मंत्री नन्द गोपाल नन्दी ने भदोही में व्यापारियों के सम्मेलन में पत्रकारों के एक सवाल पर कहा कि अपराधी कुत्ते की तरह होता है। आप भागेंगे तो दौड़ाएगा। नन्दी का यह बयान बाहुबली विधायक विजय मिश्रा पर कमेंट माना जा रहा है। बता दें कि मंत्री नन्दी पर जानलेवा हमले का आरोप विधायक विजय मिश्रा पर है। विधायक पर कई रंगदारी मांगने के मामले भी चल रहे हैं। पड़ोसी की शिकायत पर इस समय विधायक विजय मिश्रा आगरा जेल में बंद हैं। रविवार को नन्दी गोपीगंज नगर स्थित बाबा बड़े शिव मंदिर में व्यापारियों के सम्मेलन में पहुंचे थे। व्यापारियों ने उनका सम्मान किया। सम्मान समारोह के बाद उन्होंने कई मुद्दों पर बात की। इसी दौरान व्यापारियों से कहा कि अपराधी से डरना नहीं चाहिए। अपराधी कुत्ता के समान होता है। आप भागेंगे तो दौड़ायेगा। आप रुक जाएंगे तो पास आकर सूंघेगा, दुम हिलाएगा। इसलिए अपराधियों से डरने की जरूरत नहीं है। विजय मिश्रा को लेकर पूछे गए सवाल के जवाब में नन्दी ने कहा कि उन्हें किसी से डर नहीं लगता। कहा कि डर केवल भगवान से लगता है। इसी के बाद कैबिनेट मंत्री नन्दी ने कुत्ते वाली बात कही। वाराणसी में एमएलसी चुनाव में बीजेपी प्रत्याशियों के हारने और सपा की जीत पर नन्दी ने कहा कि लोकतंत्र में जीत हार लगी रहती है। हमारे कार्यकर्ताओं ने मेहनत की। हार की समीक्षा हम लोग करेंगे।

चीन ने बनाया दुनिया का सबसे फास्ट कंप्यूटर, सुपर कंप्यूटर से भी कई गुना तेज

बीजिंग। चीन के वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि उन्होंने रोशनी पर आधारित दुनिया का पहला क्वांटम कंप्यूटर बना लिया है। वैज्ञानिकों के मुताबिक, यह कंप्यूटर पारंपरिक सुपर कंप्यूटर के मुकाबले कहीं अधिक तेजी से काम कर सकता है। चीन की सरकारी मीडिया में शनिवार को प्रकाशित खबर के मुताबिक, यह वैज्ञानिकों को मिली बड़ी सफलता है और इसकी मदद से इसी तरह की और भी शक्तिशाली मशीन बनाई जा सकेंगी। चीन के सरकारी अखबार चाइना डेली ने जर्नल साइंस में प्रकाशित एक रिपोर्ट का हवाला दिया है। इसमें कहा गया है कि जियूझांग क्वांटम कंप्यूटर क्वांटम कंप्यूटेशनल एडवान्टेज को भरोसेमंद तरीके से प्रदर्शित कर सकता है, जो कंप्यूटर क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि है।

क्या होते हैं क्वांटम कंप्यूटर-बता दें कि क्वांटम कंप्यूटर बहुत तेजी से काम करते हैं जो सामान्य कंप्यूटर के लिए संभव नहीं है। क्वांटम कंप्यूटर की मदद से भौतिक विज्ञान, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और चिकित्सा क्षेत्र में उपलब्धि हासिल होती है। खबर के मुताबिक, इस सुपर कंप्यूटर को जियूझांग नाम गणित के प्राचीन चीनी ग्रंथ के नाम पर दिया गया है। यह क्वांटम कंप्यूटर जो गणना मात्र 200 सेकेंड में कर सकता है उसे दुनिया के सबसे तेज कंप्यूटर फुगाकू को करने में 60 करोड़ साल का समय लग जाएगा। उल्लेखनीय है कि पिछले साल गूगल द्वारा 53 क्यूबिट क्वांटम कंप्यूटर बनाने की घोषणा के बाद सुपर कंप्यूटर के क्षेत्र में यह दूसरी बड़ी उपलब्धि है। खबर के मुताबिक जियूझांग 76 फोटॉन में हेरफेर कर जटिल गणना करता है जबकि गूगल का क्वांटम कंप्यूटर सुपर कंडक्टिव वस्तुओं का इस्तेमाल करता है।

लव जिहाद के आरोपी की हो सकती है संपत्ति कुर्क, गृहमंत्री बोले- सरकार कर रही विचार

भोपाल। मध्य प्रदेश के गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा ने लव जिहाद के खिलाफ बनाए जा रहे कानून पर बड़ा बयान दिया है. उन्होंने कहा है कि सरकार आरोपी की संपत्ति कुर्क करने का प्रावधान जोड़ने पर विचार कर रही है. दरअसल नरोत्तम मिश्रा आज भोपाल में थे. यहां पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने बताया कि मध्य प्रदेश में लव जिहाद के खिलाफ बनाया जा रहे कानून को और सख्त बनाने पर विचार किया जा रहा है. उन्होंने कहा, लव जिहाद कानून जल्द कैबिनेट में आएगा और उसके बाद विधानसभा में 28 दिसंबर से शुरू होने वाले सत्र में इसे पेश किया जाएगा. गृह मंत्री ने कहा, हमारा कानून दूसरे प्रदेश से अलग होगा, अच्छा होगा और सख्त भी होगा. 10 साल की सजा के बारे में आपको पता ही है. इसके अलावा संपत्ति कुर्की और पीड़िता को गुजरा भत्ता जैसे विषयों पर भी सरकार की चर्चा चल रही है. उत्तर प्रदेश के बाद अब मध्य प्रदेश में भी जल्द ही लव जिहाद के खिलाफ कानून बनने जा रहा है. इस कानून को लेकर मुख्यमंत्री शिवराज

सिंह चौहान और गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा की गृह और विधि विभाग के अफसरों के साथ बैठक हो चुकी है.

अशोक गहलोत पर बरसे-नरोत्तम मिश्रा ने राजस्थान के सीएम अशोक गहलोत के सरकार गिराने की साजिश वाले बयान पर प्रतिक्रिया जाहिर की है. नरोत्तम मिश्रा ने कहा कि सब जानने के बाद भी कुछ नहीं कर पा रहे हैं तो किस बात के मुख्यमंत्री हैं. नरोत्तम मिश्रा ने कहा, अगर सीएम अशोक गहलोत को सब पता है तो सरकार के खिलाफ साजिश करने वालों के खिलाफ एक्शन लेना चाहिए, और अगर कार्रवाई नहीं कर पा रहे तो हैं तो काहे के मुख्यमंत्री. आपकी सरकार गिर रही है तो अपनी पार्टी को क्यों नहीं संभाल रहे हो. आपकी पार्टी के विधायक बार बार भागते क्यों हैं, आपकी पार्टी हर जगह टूटती क्यों है? कभी इसपर भी चिंतन करो गहलोत साहब, अपने अंदर झांककर देखो. अगर किसी पर उंगली उठाते हो तो 3 उंगली खुद पर उठती हैं. अपने परिवार को संभालो नहीं तो अगली बरसात में यह दीवार भी ढह जाएगी.

भारत बंद से पहले किसानों का ऐलान

अब हमारे मन की बात सुनें पीएम मोदी, मांगों से कोई समझौता नहीं

नई दिल्ली। नए कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों का प्रदर्शन 11वें दिन में प्रवेश कर गया है. दिल्ली-हरियाणा पर स्थित सिंधु बॉर्डर पर हजारों किसानों की भीड़ पिछले 10 दिनों से 24 घंटे से दिन रात डटी है. किसानों का प्रदर्शन गाजीपुर बॉर्डर, टिकरी बॉर्डर पर भी जारी है. इसके अलावा बुराडी ग्राउंड पर भी कुछ किसान प्रदर्शन कर रहे हैं. किसानों और सरकार के बीच 5 राउंड की बात हो चुकी है, लेकिन गतिरोध जारी है. अब किसानों ने 8 दिसंबर को भारत बंद का ऐलान किया है. इसी के साथ सबकी निगाहें अब 9 दिसंबर को सरकार के साथ होने वाली किसानों पर बातचीत पर टिकी है.

भारत बंद से मंत्री तिलमिलाए- किसान नेता किसान नेता बलदेव सिंह निहालगढ़ ने कहा कि ये आंदोलन सिर्फ पंजाब का न होकर पूरे देश में बढ़ चुका है. मंत्री तिलमिलाए हुए हैं कि क्यों भारत बंद का आह्वान किया? किसान नेता ने कहा कि 8 दिसंबर को सुबह से शाम तक बंद होगा. चक्का जाम 3 बजे तक होगा. एम्बुलेंस और शादियों के लिए रास्ता खुला रहेगा. शांतिपूर्ण प्रदर्शन रहेगा. चंडीगढ़ सेक्टर 17 के ग्राउंड में 7 तारीख को बड़ा प्रदर्शन करेंगे.

ट्रैफिक पुलिस ने जारी की एडवाइडरी

किसान आंदोलन के मद्देनजर दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने नई एडवाइजरी जारी की है. पुलिस ने बताया कि किसानों के विरोध के कारण चीला बॉर्डर (दोनों कैरिजवे) यातायात के लिए बंद है. वहीं एनएच 24 पर दिल्ली से गाजियाबाद जाने के लिए गाजीपुर बॉर्डर बंद है जबकि गाजियाबाद से दिल्ली जाने के लिए इस नेशनल हाइवे पर गाजीपुर बॉर्डर खुला हुआ है. मतलब दिल्ली से गाजियाबाद जा सकते हैं लेकिन गाजियाबाद से दिल्ली आने के लिए बॉर्डर बंद है.

एफआईआर दर्ज होने पर भड़के तेजस्वी ने सीएम नीतीश पर साधा निशाना

पटना। कृषि बिल के विरोध में गांधी मैदान में शनिवार को बिना अनुमति सभा करने के मामले में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव, कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष मदन मोहन झा सहित 18 नामजद और 500 अज्ञात के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई गई है। इसे लेकर अब तेजस्वी यादव ने बिहार सरकार पर जमकर हमला बोला है। तेजस्वी ने रविवार को ट्वीट कर कहा है कि डरपोक और बंधक मुख्यमंत्री की अगुवाई में चल रही बिहार की कायर और निकम्मी सरकार ने किसानों के पक्ष में आवाज उठाने के जुर्म में हम पर एफआईआर दर्ज की है। दम है तो गिरफ्तार करो, अगर नहीं करोगे तो इंतजार बाद स्वयं गिरफ्तारी दूंगा। किसानों के लिए एफआईआर क्या अगर फांसी भी देना है तो दे दीजीए। वहीं राजद ने बिहार सरकार पर किसान विरोधी होने का आरोप लगाते हुए कहा है कि बिहार सरकार गोडसे को पूजने वालों के संरक्षण में कॉरपोरेट जगत के इशारे पर काम कर रही है। पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता चितरंजन गगन ने कहा कि किसान आन्दोलन के समर्थन में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव के नेतृत्व में महागठबंधन को गांधी मैदान मे धरना देने और गांधीजी के प्रतिमा के सामने संकल्प लेने की अनुमति न देकर राज्य सरकार ने अपने किसान विरोधी चरित्र को उजागर कर दिया है।

केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी बोले-

असली किसान कानून से परेशान नहीं, विपक्ष भड़का रहा आंदोलन

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी ने आरोप लगाया है कि विपक्ष किसानों को भड़का रहा है. उन्होंने कहा कि किसानों को समझना चाहिए कैसे इस मुद्दे का राजनीतिकरण किया जा रहा है, और उन्हें राजनीतिक फायदे के लिए काम कर रहे लोगों का शिकार नहीं होना चाहिए. केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सरकार ने साफ कर दिया है कि रूककी व्यवस्था जारी है और रहेगी. हम इसे लिखकर भी दे सकते हैं. मुझे लगता है कि कांग्रेस की राज्य सरकारें और विपक्ष किसानों को भड़का रही हैं. उन्होंने कहा कि देश का किसान इन कानूनों के पक्ष में है, लेकिन कुछ लोग उन्हें भड़का रहे हैं. मुझे भरोसा है कि देश के किसान कुछ भी ऐसा नहीं करेंगे जिससे देश की शांति खतरे में पड़े. केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री ने कहा कि इन कानूनों ने किसानों को आजादी दी है. समाचार एजेंसी एएनआई के मुताबिक कैलाश चौधरी ने कहा, मुझे पीएम मोदी के नेतृत्व और किसानों में विश्वास है. मुझे यकीन है कि किसान कभी भी ऐसा निर्णय नहीं लेंगे

जिससे देश में कहीं भी अशांति पैदा हो. इन कानूनों ने उन्हें स्वतंत्रता प्रदान की है. मुझे नहीं लगता कि अपने खेतों में काम करने वाले असली किसान इससे परेशान हैं. यह पहली दफा नहीं है जब कृषि राज्यमंत्री कैलाश चौधरी किसान आंदोलन के लिए विपक्ष को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं. किसानों के साथ शनिवार को पांचवें दौर की बातचीत से पहले भी कैलाश चौधरी ने कहा था कि केंद्र के साथ बैठक में किसानों की शंकाओं को दूर किया जाएगा. हाल की बैठकों में, कुछ मुद्दों को स्पष्ट किया गया था. यह विपक्ष की राजनीति है, वे विरोध को भड़का रहे हैं. हमें उम्मीद है कि किसान विरोध वापस लेंगे.

किसानों से नहीं बात-बहरहाल, कृषि कानूनों के खिलाफ दिल्ली की अलग-अलग सीमाओं पर पिछले 10 दिन से किसानों का आंदोलन जारी है. सरकार और किसानों के बीच शनिवार को भी नए कृषि कानूनों को लेकर बैठक हुई, लेकिन वार्ता बेनतीजा रही. अब अगली बैठक 9 दिसंबर को होनी है. किसान संगठन नए कृषि कानूनों को वापस लिए जाने की मांग पर अड़े हुए हैं. फिलहाल किसान इस मुद्दे पर सरकार से हां या ना में जवाब की मांग पर अड़ गए हैं. इस बीच 8 दिसंबर को किसान संगठन की ओर से भारत बंद का भी आह्वान किया गया है.

किसानों के समर्थन में अखिलेश यादव

कल हर जिले में निकाली जाएगी किसान यात्रा

लखनऊ। किसान आंदोलन लगातार तेज हो रहा है. पिछले 11 दिनों से किसान अपनी मांगों को पूरा कराने के लिए विरोध-प्रदर्शन कर रहे हैं. अब धीरे-धीरे अलग-अलग क्षेत्रों के लोग किसानों को अपना समर्थन दे रहे हैं. राजनीतिक पार्टियां भी किसानों के समर्थन में उतर आई हैं. सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि किसान कानून किसानों के लिए डेथ वॉरेंट है. उन्होंने आगे कहा कि सरकार को मंडियों को सुधारना चाहिए था. किसानों को पता नहीं था कि ये कानून लागू हो जायेगा और बड़े-बड़े आदमी किसान बन जाएंगे. बता दें कि कल वह कन्नौज में किसान मंडी में जाएंगे. उन्होंने आगे कहा कि कल हर जिले में लगातार

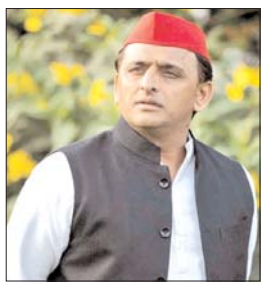

किसान यात्रा निकाली जाएगी. प्रदेश की सबसे बड़ी मंडी ठठिया से तिरवा तक किसान यात्रा निकाली जाएगी. इतना ही नहीं चुनाव में भाजपा की हार पर तंज कसते हुए उन्होंने कहा कि वाराणसी,गोरखपुर में ईवीएम को बैलेट पेपर ने हरा दिया. उन्होंने आगे कहा कि समाजवादी पार्टी हर साल अम्बेडकर जी का संविधान दिवस मनाएगी. अखिलेश यादव ने स्थ चुनाव में पार्टी से समर्थित दोनों प्रत्याशी को जीत पर बधाई दी जो झांसी और बनारस के थे. समाजवादी पार्टी ने यह तय किया है कि कल हर जिले में किसान यात्रा होगी. बात करें किसान आंदोलन की तो किसान और सरकार की बीच पांच दौर की बातचीत हो चुकी है, इसी के साथ किसानों ने 8 दिसंबर को भारत बंद का ऐलान कर दिया है.

नासिक में गैस सिलेंडर फटने से बिहार के 5 मजदूरों की मौत, गांव में मचा कोहराम

वैशाली। महाराष्ट्र के नासिक में एक ही कमरे में रहकर मजदूरी करने वाले बिहार के पांच मजदूरों की झुलसकर मौत हो गई, जबकि दो आंशिक रूप से घायल हैं। मरने वाले मजदूरों में दो वैशाली जिले के और तीन मुजफ्फरपुर जिले के रहने वाले थे। सभी सातों मजदूर एक ही कमरे में रहकर अपना गुजर बसर कर रहे थे। आग लगने के बाद गैस सिलेंडर फटने से पांचों की मौत हुई, जबकि लालगंज के ही दो मजदूर घायल हो गए। घटना 1 दिसंबर के सुबह घटी, जिसमें 5 लोगों की इलाज के दौरान 4 दिसंबर की देर रात मौत हो गई। गोरौल थाना क्षेत्र के इनायतनगर गांव निवासी मृतक मो. मुर्तुजा के पिता मो. ईसराफिर ने बताया कि घटना के पूर्व रात्रि में सभी लोग खाना बनाने के बाद खाकर सो गए। सोने के दौरान ही कमरे में गर्मी महसूस हुई तो किसी ने पंखे को चलाया। पंखा चालू करते ही उसमें शॉट सर्किट हुई और कमरे में आग लग गई। उन्होंने बताया कि इससे ऐसे लगता है कि या तो रात में खाना बनाने के बाद गैस खुला छोड़ दिया होगा या फिर गैस रिसाव हो रहा होगा, जिससे यह घटना घटी।

श्राद्ध भोज में नशे में पहुंचे दबंगों की करतूत, महिलाओं ने पंगत में बैठने से मना किया तो लाठी-डंडे से पीटा

पटना। राजधानी पटना के पीपरा थाने के बेहरावां चकिया में शुक्रवार रात एक श्राद्ध भोज में महिलाओं की पंगत में बैठने से मना करने पर हुए विवाद में नशे में धूत गांव के वार्ड सदस्य समेत आधा दर्जन लोगों ने लाठी डंडे से पीट आधा दर्जन लोगों को जख्मी कर दिया। इसमें दो की हालत गंभीर बताई जाती है और उन्हें पीएमसीएच में भर्ती कराया गया है।

जेपी दलाल बोले- मेरी भी एक मांग, हरियाणा के किसानों को मिले एसवाईएल का पानी

गुरुग्राम। केंद्र सरकार के नए कृषि कानून के खिलाफ किसान प्रदर्शन कर रहे है. किसानों और सरकार के बीच पांच दौर की बातचीत हो चुकी है लेकिन, अभी तक नतीजा नहीं निकला है. इसी बीच हरियाणा के कृषि मंत्री जेपी दलाल ने बड़ा बयान दिया है. उन्होंने कहा कि किसानों की मांग में मेरी भी एक मांग है कि हरियाणा के किसानों को भी स्वरुका पानी मिले. उन्होंने आगे कहा कि सभी पार्टियों के नेता और खाप पंचायत स्वरुका समाधान निकाले. किसान होने के नाते स्वरुमेरी मांग है. प्रदर्शन कर रहे किसानों के साथ पांचवे दौर की बातचीत हुई, हमारी केंद्र सरकार अन्नदाता के अनुकूल रास्ता निकालकर फैसला करेगी. सरकार ने किसानों को मानने का आश्वासन दिया है. उन्होंने आगे कहा कि सही मायनों में प्रधानमंत्री मोदी हितैषी हैं, पिछली सरकारों की तुलना में भाजपा सरकार ने अच्छी व्यवस्था की है. उन्होंने आगे कहा कि प्रदेश के कुछ लोग ,कुछ खाप, इनेलो नेता ,निर्दलीय विधायक आंदोलन को समर्थन दे रहे हैं.

ग्वालियर से प्रकाशित

दैनिक पुष्पांजली टुडे

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका,ऑनलाइन न्यूज़ चैनल,पोर्टल,एंड्रॉयड ऐप

को

सम्पूर्ण भारत में नियुक्त करना है

ब्यूरो चीफ / रिपोर्ट्स

मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, हरियाणा, गुजरात, बिहार, झारखंड, उड़ीसा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, आंध्रप्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, असम, गोआ, कर्नाटक, केरल

आदि राज्यो के जिला एवं तहसील स्तर पर मनोनीत करना है।

संपर्क करें

कार्यालय : ए ब्लॉक,404 भाऊ साहब पोतनीस एंक्लेव,गोले का मंदिर ग्वालियर मध्यप्रदेश मो. 8269307478,7999246560

Website - www.pushpanjalitoday.com,
Email - pushpanjalitoday@gmail.com

भारतीय वायुसेना की ताकत और बढ़ाने जा रहा राफेल देने वाला दोस्त फ्रांस

लद्दाख में चीन को मिलेगा मुंहतोड़ जवाब

नई दिल्ली। चीन के साथ पूर्वी लद्दाख में जारी सीमा विवाद के बीच भारतीय वायुसेना (आईएएफ) अपनी ताकत और अधिक बढ़ाने जा रही है। यह ताकत कोई और नहीं, बल्कि राफेल विमान देने वाला भारत का दोस्त फ्रांस ही बढ़ाएगा। दरअसल, भारत सरकार फ्रांस के एक प्रस्ताव पर विचार कर रही है, जिसमें वह 6 एयरबस 330 मल्टी रोल ट्रांसपोर्ट टैंकर एयरक्राफ्ट्स खरीदेगी। यह एक मल्टी-रोल मिड-एयर रिफ्यूलर एयरक्राफ्ट है। इसके आने से लद्दाख में भारतीय वायुसेना की स्थिति पहले की तुलना में और बेहतर हो जाएगी। अभी भारतीय वायुसेना के पास सात रूसी रिफ्यूलर्स एयरक्राफ्ट्स हैं। साउथ ब्लॉक के सूत्रों के अनुसार, जहां भारतीय वायुसेना ब्रिटिश कंपनी से लीज

पर एयरबस 330 एमआरटीटी को लेना चाहती है, तो वहीं, फ्रांसीसी प्रस्ताव में कम दरों पर 5-7 साल पुराने एयरक्राफ्ट्स शामिल हैं। वायुसेना पिछले एक दशक से एमआरटीटी एयरक्राफ्ट्स को खरीदने के लिए काफी उत्सुक रही है। पूर्व भारतीय वायुसेना प्रमुख के अनुसार, एयरबस 330 एमआरटीटी में एयरबस 340 के मुकाबले काफी बड़े विंग्स हैं, जिसकी मदद से वह एक ही समय में सेंट्रल रिफ्यूलिंग बूम सिस्टम से बीच आसमान में दो फाइटर जेट्स में ईंधन भर सकता है। एयरबस एयरक्राफ्ट के बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि यह अत्यधिक कुशल और उच्च शक्ति वाले इंजनों की वजह से केबिन और ईंधन में 260 कर्मियों को ले जा सकता है।

स्वैच्छिक आनंद सेवा सप्ताह के दूसरे दिन गांव जालौनी पहुंची आनंदक सेवा टीम...

अम्बाह... मध्यप्रदेश राज्य आनंद संस्थान की पहल पर जिला मुरैना में आनंद संस्थान द्वारा मनाए जा रहे स्वैच्छिक सेवा सप्ताह के अंतर्गत आज आनंदक और आचार्य आनंद क्लब की टीम तहसीलदार सर्वेश यादव और जिला नोडल अधिकारी रामकुमार सिंह तोमर के साथ गांव जालौनी पहुंची। जहां दिव्यांग परिवार मुनेश्वर सिंह और तहसीलदार सिंह के दर्जनभर परिजनों का स्वास्थ्य परीक्षण करने के उपरांत उनकी आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन किया और उसके पश्चात इन परिवारों को गरीबी रेखा में शामिल करने का आश्वासन तहसीलदार सर्वेश यादव ने

गरीबी रेखा में जोड़े जायेंगे जरूरतमंद लोगों के नाम: तहसील दार सर्बेश यादव

दिया। इस अवसर पर आचार्य आनंद क्लब परिवार की ओर से अध्यक्ष डॉ सुधीर आचार्य एवं जिला संपर्क व्यक्ति बालकृष्ण शर्मा के नेतृत्व में परिवार के सभी बच्चों बुजुर्गों महिलाओं और पुरुषों को वस्त्र आदि एवं उपहार भेंट किए गए एवं तहसीलदार सर्वेश यादव और नोडल अधिकारी राम कुमार सिंह तोमर द्वारा भी पांच पांच सौ रूपए प्रदान किए गए। संचालन आनंद टीम के दिव्यांग कार्यक्रम प्रभारी अरविंद मावई ने किया। इस अवसर पर व्यवस्थापक विश्वनाथ गुर्जर दुष्यंत तोमर एवं आनन्दक साथी सुजाता तोमर,शिल्पी कुलश्रेष्ठ, सरिता उपाध्याय कपिल भारद्वाज, वीरेंद्र शर्मा मुख्य रूप से उपस्थित थे।

थाना प्रभारी की मुस्तैदी से अब जाम से निजात मिली लोगों को जनप्रतिनिधियों ने भी सराहना की कार्य की

गोहद। गोहद चौराहे पर प्रतिदिन एनएच 92 पर लगने वाले जाम से निजात दिलाने के लिए गोहद चौराहा थाना प्रभारी गोपाल सिकरवार ने कमर कस ली है गोहद चौराहे पर भिंड रोड ग्वालियर रोड पर लगने वाले चार पहिया ठेले ,रेडी एवं सड़क किनारे खड़े होने वाले वाहनों पर बड़ी मुस्तैदी से कढ़ाई का पालन करते हुए उन्होंने सड़क के दोनों ओर अतिक्रमणकारियों के विरुद्ध कार्यवाही प्रारंभ कर दी है उनकी इस प्रभावी कार्यवाही से गोहद चौराहे पर व्यापार करने वाले व्यापारियों ने गोहद चौराहा पुलिस व थाना प्रभारी की इस प्रभावी कार्यवाही की सराहना की है गोहद चौराहे पर मेडिकल व्यवसाई श्याम अग्रवाल कहते हैं कि आए दिन जाम लगने के कारण यात्रियों को आवागमन में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा था दुकानों के बाहर वाहन खड़े कर अतिक्रमण कर व्यापार को प्रभावित करने का कार्य होता था अब हमें उससे निजात मिल रही है। गोहद चौराहे पर स्थित किराना व्यापारी बबलू गुप्ता कहते हैं कि आए दिन चार पहिया रेडी सब्जी आदि के ठेला लगाकर रास्ता अवरुद्ध होता था जिससे भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा था अब राहत है। बिंदास हेयर कटिंग के

संचालक बसंत श्रीवास कहते हैं कि असामाजिक तत्व गोहद चौराहे पर अभद्रता कर माहौल खराब कर रहे थे थाना प्रभारी के तत्परता के कारण अपराधियों में डर का माहौल व्याप्त है गोहद चौराहा निवासी संजू तोमर बताते हैं कि अब पुलिस 24 घंटे अलर्ट होकर जनता की निगरानी बड़ी ही चौकसी के साथ कर रही है अपराधिक प्रवृत्ति एवं चोरी करने वाले चोरों पर अब पुलिस का शिकंजा बड़ी ही मुस्तैदी से कसा हुआ है गोहद चौराहे के नागरिक अब अपने आप को सुरक्षित महसूस कर रहे हैं। इस संबंध में चौराहा थाना प्रभारी से जब हरिभूमि संवाददाता से बात हुई तो उन्होंने बताया कि मैं ऐसा कुछ भी नया नहीं कर रहा हूं पुलिस के कर्तव्यों का पालन कर रहा हूं गोहद चौराहे पर मेरे आने से पूर्व अवैध शराब की बिक्री व्यापारियों से अभद्रता असामाजिक तत्वों द्वारा की जाती थी सड़क किनारे अतिक्रमण कर आवागमन को प्रभावित करने का कार्य संचालित था चौराहे के व्यापारियों ने मुझे उपरोक्त समस्याओं के बारे में बताया मैंने अपने पुलिस टीम के सहयोग से उन समस्याओं के निराकरण करने का प्रयास किया है सभी का सहयोग रहा तो पुलिस पूरी मुस्तैदी के साथ कार्य करेगी

इनका कहना है

गोहद अनुभाग में सबसे ज्यादा जाम की स्थिति गोहद चौराहे पर बनती थी शादियों का माहौल चल रहा है आवागमन प्रभावित होता था जिसके पुख्ता इंतजाम के लिए गोहद चौराहा थाना प्रभारी को निर्देशित किया गया था

आरकेएस राठौर
एसडीओपी गोहद

आज अंतर्राष्ट्रीय महासंघ भारत ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नाम ज्ञापन कलेक्टेड जिलाधिकारी को दिया

आज अंतर्राष्ट्रीय महासंघ भारत ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नाम ज्ञापन कलेक्टेड जिलाधिकारी को दिया

आगरा से राहुल कुमार की रपोर्ट

आगरा। आज अंतरराष्ट्रीय महासंघ भारत ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नाम ज्ञापन कलेक्टेड जिलाधिकारी को दिया । अंतर्राष्ट्रीय हिंदू महासंघ भारत ने शौर्य दिवस के उपलक्ष में माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नाम डीएम आगरा के समक्ष ज्ञापन देकर भगवान राम की पहचान कराने वाले रामायण के रचयिता महर्षि बाल्मीकि का मंदिर का निर्माण अयोध्या भगवान राम जन्म भूमि पर होना चाहिए।। प्रदेश अध्यक्ष सुमित कटियार एवं महानगर अध्यक्ष अर्जुन गिर्ज बताया कोर्ट के अंदर मुकदमा चलने के उपरांत भगवान महर्षि वाल्मीकि लेखनी से लिखी गई रामायण के साक्ष्य कोर्ट के अंदर प्रस्तुत किए गए जब तक भगवान महर्षि वाल्मीकि अपनी लेखनी से रामायण नहीं लिखते तो आराध्य देव भगवान राम को विश्व के अंदर कोई नहीं जाने वाला था इसलिए भगवान महर्षि वाल्मीकि स्वामी वा भगवान वशिष्ठ का मंदिर अयोध्या राम जन्म भूमि पर भव्य मंदिर का निर्माण होना अति आवश्यक है। पूरे विश्व की हिंदुओं आराध्य भगवान महर्षि वाल्मीकि स्वामी है।ज्ञापन देने वालों में मुख्य रूप से उपस्थित प्रदेश अध्यक्ष सुमित कटियार, महानगर अध्यक्ष अर्जुन गिर्ज, मंडल उपाध्यक्ष मुकेश सोनी, मंडल मंत्री विजय गुप्ता, महानगर उपाध्यक्ष पंडित भूपेंद्र राजोरिया, महानगर उपाध्यक्ष राजपाल प्रजापति, महानगर वरिष्ठ मंत्री विजेंद्र भजन, महानगर मंत्री अनिल पचौरी, महानगर मंत्री शक्ति चौधरी, मनोज शर्मा, विशाल राणा ,एम एल वर्मा ,राहुल वर्मा, विवेक कुमार, एडवोकेट नंदकिशोर, सीपी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नगर कारवां अनिल कुमार गिर्ज आदि संख्या में लोग उपस्थित रहे।

नेशनल लोक अदालत का आयोजन 12 दिसंबर को

श्योपुर। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली एवं मप्र राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जबलपुर के दिशा-निर्देशानुसार एवं मा. जिला न्यायाधीश/अध्यक्ष महोदय, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, श्योपुर श्री एसएस रघुवंशी के मार्गदर्शन में 12 दिसंबर, 2020 (शनिवार) को जिला न्यायालय, श्योपुर एवं तहसील न्यायालय विजयपुर में नेशनल लोक अदालत का आयोजन ऑनलाईन/ऑफलाईन के माध्यम से किया जाना है। जिला विधिक सहायता अधिकारी कु. विभूति तिवारी ने बताया कि नेशनल लोक अदालत में न्यायालय में लंबित राजीनामा योग्य आपराधिक प्रकरण, सिविल प्रकरण, बैंक रिकवरी, एन.आई.एक्ट की धारा 138, क्लेम प्रकरण, लेबर डिस्प्यूट, विद्युत एवं जलकर, पारिवारिक विवाद, भूमि अधिग्रहण, राजस्व प्रकरण (जिला न्यायालय में लंबित) के साथ-साथ विभिन्न विभागों के प्रीलिटिगेशन प्रकरणों में एन.आई.एक्ट की धारा, 138, क्लेम प्रकरण, लेबर डिस्प्यूट, विद्युत एवं जलकर तथा अन्य राजीनामा योग्य पारिवारिक प्रकरण, आपराधिक प्रकरण एवं सिविल प्रकरणों का निराकरण भी किया जावेगा।

14 वीं पुण्य स्मृति पर मुक्तिधाम में पौधारोपण

गोहद। चौराहा गोहद वार्ड नं 17 में स्थित मुक्तिधाम मैं पौधारोपण कु.प्रिया अग्रवाल की 14बी पुण्य स्मृति पर मुक्तिधाम में पौधारोपण अखिल भारतीय अग्रवाल परिचय सम्मेलन की ओर से किया गया। समाजसेवी राकेश अग्रवाल ने पौधे रोपित करते हुए कहा कि मुक्तिधाम में बेटी कु. प्रिया अग्रवाल की 14वी पुण्य स्मृति पर पौधारोपण करना पुनीत सेवा कार्य है। प्रकृति व पर्यावरण का संतुलन रखने के लिए हमें वृक्षारोपण निरंतर करते रहना चाहिए क्योंकि वृक्ष वातावरण को शुद्ध व स्वच्छ बनाते हैं इनकी जड़ें भूमि के कटाव को रोकती है जेपी अग्रवाल ने कहा कि हम पौधे लगाकर इनकी बड़े होने तक देखभाल अपने बच्चों की तरह करें क्योंकि आजकल मानव जाति अपनी अपनी जरूरतों के लिए अंधाधुंध पेड़ काटकर विनाश की ओर जा रहा है। पेड़ पौधों के बिना मानव जीवन असुरक्षित हो रहा है। सादा ऑक्सीजन नहीं मिल पा रही वातावरण में विषैली गैस फैलने से पर्यावरण को नुकसान पहुंच रहा है कहा पौधारोपण में हरिओम अग्रवाल, सुरेश गुप्ता, एडवोकेट

इस अवसर पर राकेश अग्रवाल ने अपनी ओर से सोती धाम में बैठने के लिए एक सिटिंग चेयर के लिए भिंड आशीष अग्रवाल, पंकज अग्रवाल, रिंकू, रामदास, विनय ओझा आदि प्रमुख रूप से थे।

दतिया जिला कलेक्टर संजय कुमार ने दी जनता को समझाइश

उप संपादक संदीप प्रधान

जब हमारे उप संपादक संदीप प्रधान ने कलेक्टर संजय कुमार से सवाल किया कि कोरोना महामारी के चलते देश में बहुत सी जगह छूट दे दी गई लोग बेखौफ घूम रहे उनके लिए क्या समझाए देना चाहेंगे आप तब कलेक्टर संजय कुमार ने कहा कि अभी देश पूर्ण तरीके से अनलॉक नहीं हुआ है कुछ चीजें अभी बंद है जैसे कि स्कूल बंद है अन्य बहुत सी चीजें ऐसी बंद है इसलिए कलेक्टर ने कहा जिले की सभी नागरिकों से अपील करता हूं कि सावधानी ही हमारी असावधानी है इसलिए सब लोग मार्क्स लगाएं बार-बार हैंड वॉश करें बार-बार सैनिटाइजर करते रहे और सोशल डिस्टेंस का पालन करें बहुत जल्द ही हम सब लोग मिलकर कोरोना को हरा सकते हैं और कहां हमारे देश के प्रधानमंत्री मोदी जी के आव्हान का पालन करें क्योंकि सावधानी ही हमारी सतर्कता है।

सभी सफाईकर्मियों को बधाई और उनका अभिनंदन

स्वच्छता के सभी घटकों में मध्यप्रदेश को नं-1 बनाएंगे, परिवेश को स्वच्छ रखना हर नागरिक का कर्तव्य, मुख्यमंत्री श्री चौहान ने स्वच्छता सेवा सम्मान वितरित किए

भिण्ड। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि स्वच्छता के क्षेत्र में मध्यप्रदेश गत कई वर्षों से देश में कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। स्वच्छता सर्वेक्षण में हमारा इंदौर शहर गत 04 वर्षों से लगातार भारत का स्वच्छतम शहर चुना जा रहा है। इसके साथ ही हमारे अन्य नगरीय निकाय भी स्वच्छता के क्षेत्र में अग्रणी बन रहे हैं। हम सब मिलकर संकल्प लेते हैं कि हम मध्यप्रदेश को स्वच्छता के सभी घटकों में नं-1 बनाएंगे।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि ष्स्वच्छता के क्षेत्र में मध्यप्रदेश की उपलब्धियों के लिए मैं मुख्य रूप से सभी सफाई कर्मियों को बधाई देता हूँ तथा उनका अभिनंदन करता हूँ।ष् परिवेश को स्वच्छ रखना हर नागरिक का कर्तव्य है। मुख्यमंत्री श्री चौहान आज स्थानीय मिंटो हॉल में स्वच्छता सेवा सम्मान-2020 वितरित कर रहे थे। उन्होंने स्वच्छता सर्वेक्षण 2020 में विभिन्न क्षेत्रों में अव्वल आने वाले प्रदेश के इंदौर, भोपाल, उज्जैन, सागर, जबलपुर सहित कई नगरीय निकायों को सम्मानित किया। कार्यक्रम में नगरीय प्रशासन एवं आवास मंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह, विभाग के राज्य मंत्री श्री ओ.पी.एस. भदौरिया, सांसद सुश्री प्रज्ञा ठाकुर, इंदौर की महापौर श्रीमती मालिनी गौड़, विधायक श्रीमती कृष्णा गौर, विभाग के प्रमुख सचिव श्री नीतेश व्यास आदि उपस्थित थे।

सकारे से सफाई को काम चालू करते थे-मुख्यमंत्री श्री चौहान ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से सागर, सिंगरौली एवं इंदौर नगर निगम के सफाई कर्मियों से बातचीत कर पूछा कि उन्होंने किस तरह अपने नगरीय निकाय को अव्वल बनाया। सागर की सुश्री राजकुमारी ने मुख्यमंत्री को बताया कि वे सुबह से ही सफाई के काम में लग जाती थीं (ष्सकारे से सफाई को काम चालू करत थेष्) और शाम तक अपनी टीम के साथ लगी रहती थीं। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने पूरी टीम को बधाई दी। सिंगरौली के युवा सफाई समूह के सदस्य आशीष एवं महजबीन ने मुख्यमंत्री को बताया कि उन्होंने 3 आर अर्थात रिसाइकिल, रिड्यूज एवं रीयूज के साथ ही चौथा आर प्रिफ्यूजष् का भी प्रयोग किया जिससे स्वच्छता प्राप्त करने में आसानी रही। रिफ्यूज का अर्थ है पॉलीथीन आदि ऐसी वस्तुओं के उपयोग को नकारना जो पर्यावरण को हानि पहुंचाते हैं। प्रधानमंत्री ने दी स्वच्छता की प्रेरणा मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि हमारे दूरदर्शी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छता के महत्व को पहचाना। उन्होंने स्वयं भी झाड़ू पकड़ी और दूसरों को भी पकड़ाई। स्वच्छता के इस अभियान से आज दुनिया में भारत की अलग पहचान बनी है। स्वच्छ, सुंदर, स्वस्थ भारत।

स्वच्छता में ईश्वर का निवास- मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि स्वच्छता में ही ईश्वर का निवास है। स्वच्छता से ही स्वास्थ्य है, समृद्धि है तथा सुख है।

मैं भी सफाईकर्मी हूँ-मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि हमें हर क्षेत्र में प्रदेश को स्वच्छ बनाना है। स्वच्छ परिवेश, मिलावटहीन स्वच्छ खाद्य सामग्री, गुंडों एवं बदमाशों से रहित स्वच्छ प्रदेश। मैं मध्यप्रदेश से मिलावटखोरी, अपराधों आदि की गंदगी को मिटा दूंगा। मैं भी एक सफाईकर्मी हूँ।

जीरो वेस्ट वार्ड-इंदौर नगर निगम के वार्ड क्रं-73 की सुश्री फातिमा आदि ने मुख्यमंत्री को बताया कि उन्होंने अपने वार्ड को ष्जीरो वेस्ट वार्डष् बनाया है। अर्थात उनके वार्ड में निकलने वाले गीले एवं सूखे कचरे को वे रियूज व रिसाइकिल कर लेते हैं। गीले कचरे से खाद आदि बन जाती है व सूखे कचरे से विभिन्न कलात्मक चीजें बना लेते हैं। इस प्रकार उनके वार्ड से कोई कचरा नहीं निकलता। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने इस प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि हमें मध्यप्रदेश को भी ष्जीरो वेस्ट प्रदेशष् बनाना है। कार्यक्रम में नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के कुशल मार्गदर्शन के कारण ही स्वच्छ सर्वेक्षण में प्रदेश को विशेष उपलब्धियाँ मिली हैं। आगे हम और बेहतर करेंगे। राज्य मंत्री श्री ओ.पी.एस. भदौरिया ने भी संबोधित किया। आभार प्रदर्शन आयुक्त नगरीय प्रशासन एवं विकास श्री निकुंज श्रीवास्तव ने किया।

ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह आज मुरैना होकर अजमेर जायेंगे

मुरैना। प्रदेश के ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर 6 दिसम्बर को प्रातः 11 बजे ग्वालियर से प्रस्थान कर अजमेर जायेंगे। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ऊर्जा मंत्री श्री तोमर 6 दिसम्बर को प्रातः 11 बजे ग्वालियर से कार द्वारा प्रस्थान कर मुरैना, धौलपुर, भरतपुर, मेंहदीपुर होते हुये जयपुर-अजमेर दोपहर 2 पहुंचेगे। मंत्री श्री तोमर दोपहर 2.30 बजे जयपुर-अजमेर से कोटा, बूंदी, झालाबाढ़, राजगढ़ होते हुये भोपाल रात्रि 8 बजे पहुंचेगे।

वर्तमान मेहगांव विधायक के द्वारा ग्राम पंचायतों में दिया जा रहा है भ्रष्टाचार को बढ़ावा

वर्तमान विधायक को मिली बंपर जीत से वोटर्स उम्मीद लगाई थी की एक ईमानदार नेता बनने से मेहगांव विधानसभा में भ्रष्टाचार कुछ कम हो जाएगा लेकिन कुछ अब ऐसा उसका उल्टा हो रहा है एक ओर जहां ओपीएस भदौरिया जी ने नारा दिया था कि हर कार्यकर्ता हर वोटर्स एक ओपीएस भदौरिया बन के चुनाव लड़े और यही हुआ जिन्होंने ईमानदारी सेउनकको वोट दिया उन्हीं वोटरों साथ छलावा किया जा रहा है और वर्तमान विधायक परिजनों द्वारा लांच लगाया जा रहा है कि हम को किसी ने वोट दिया है या नहीं दिया है यह पता है उनको लग रहा है कि केवल ठाकुर वोटर से ही वो चुनाव जीते है लेकिन ऐसा नहीं है ठाकुर को साथ-साथ और भी वर्ग ने उनको वोट दिया है जिससे उनको इतनी बड़ी जीत हासिल हो सकी उनके कुछ ऐसे कार्य करता है तो दलाली का कार्य करते हैं और विधायक की आड़ में उनका नाम लेकर ग्राम पंचायतों में कर्मचारियों द्वारा भ्रष्टाचार करवाने का कार्य कर रहे हैं इसमें कुछ पूर्व विधायक भी शामिल है यह जानकारी पत्रकार संतोष सिह भदौरिया को मौखिक रूप से दी और कहा हमें दलित होने के कारण जानबूझकर परेशान किया जा रहा है क्या हमने विधायक जी को वोट नहीं दिए जो वह किसी बहकावे में आकर उनके परिजन कह रहे है कि उन्होंने वोट नही दिया है केवल हमारी विपक्षी ठाकुरों की ही बात मानते हैं अगर ऐसा ही है तो हमारे साथ की जो ठाकुर है उनसे एक बार आकर पूछे और जानकारी लें और जांच करवाएं सत्य क्या है कुछ दारु भाई ठाकुर हैं इनका गांव में कोई वजूद ही नहीं है ऐसे लोगों के बहकावे में आकर हम लोगों को नजरअंदाज किया जा रहा है एक पंचायत में तो आपस में ठाकुरों के विवाद के कारण दलित सरपंच को बलि का बकरा बनाया जा रहा है जिसके कारण ग्राम पंचायतों में1 साल से विकास प्रभावित हो रहे हैं और पंचायत सचिव अपनी मनमानी अवैध रूप से वसूली करने में जुटे हुए वो कहते हैं कि मंत्री जी तो हम हैं । क्योंकि पंचायत सचिव नौकरी के साथ-साथ उस पंचायत में राजनीति भी करते हैं जो ठाकुरों की दूसरी पार्टी की सपोर्ट लेकर चलते हैं इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि जमीनी स्तर पर क्या चल रहा है । जिस सचिव के खिलाफ जुलाई 2020 में सभी ग्रामवासी कलेक्टर महोदय के समक्ष शिकायत रखी थी उस शिकायत में जांच की गई जांच में सत्य पाया गया कि ग्राम पंचायत सचिव ने अनियमितताएं की जिसके कारण उसके वित्तीय पावर हटा दिए गए लेकिन राजनीतिक हस्तक्षेप के कारण उसे वापस वित्तीय पावर देकर उसी पंचायत में पदस्थ किया गया है जिससे ग्राम पंचायत सचिव के हौसले और बुलंद हो गए ।

नगर निगम कमिश्नर ने किया सफाई संरक्षको सम्मान

मुरैना। एलईडी के माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी के उद्बोधन का किया प्रसारण। स्वच्छता सर्वेक्षण 2020 में उत्कृष्ट कार्य करने वाले नगरी निकाय को मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा भोपाल में सम्मानित किया गया। जिन निकायों ने स्वच्छता सर्वेक्षण में सर्वश्रेष्ठ कार्य किया उन्हें अलग-अलग कैटेगरी में सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया और मुख्यमंत्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि मध्य प्रदेश स्वच्छता सर्वेक्षण में बहुत सराहनीय कार्य कर रहा है यह गौरव की बात है कि मध्य प्रदेश का इंदौर शहर स्वच्छता सर्वेक्षण में लगातार चौथी बार पूरे देश में प्रथम रहा और मध्य प्रदेश को नई पहचान पूरे देश में इंदौर शहर दे रहा है इंदौर शहर स्वच्छता में काफी आगे है देश-विदेश से लोग इंदौर की स्वच्छता को देखने आते हैं। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण नगर निगम मुरैना द्वारा जीवाजी गंज का स्थित टाउन हॉल में किया गया। कार्यक्रम में नगर निगम के आयुक्त श्री अमरसत्य गुप्ता, स्वास्थ्य अधिकारी ललित शर्मा, जनसंपर्क अधिकारी रहीम चौहान, गाड़ी अड्डा प्रभारी मुन्नालाल बरया समाजसेवी संस्था कल्पतरु की सचिव सोनाली और उनकी पूरी टीम कार्यक्रम में उपस्थित थे। कार्यक्रम के उद्बोधन में नगर निगम आयुक्त अमर सत्य गुप्ता ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमें भी अन्य नगरी निकाय से प्रेरणा लेकर स्वच्छता सर्वेक्षण 2021 में मेहनत और ईमानदारी के साथ कार्य कर मुरैना शहर को साफ सुथरा और स्वच्छ बनाना है।

VISION 2020
ग्वालियर शहर में पहली बार हर सेवा और वस्तु बहुत ही सस्ती
जियो रीचार्ज एक माह 199 वाला केवल 180 में।
आइडिया और एयरटेल का रीचार्ज केवल 225/- में 249 वाला।
किराना का सामान सबसे सस्ता।
HOME TUITION का डेमो फ्री वो भी 15 दिन।
केक केवल 180/- में फ्री HOME DELIVERY के साथ।
टिफिन सेंटर खाना बिल्कुल घर जैसा।
ऐसे ही 5 लाख प्रोडक्ट्स और 50 से ज्यादा सेवाएँ बस एक कॉल या वॉट्सएप्प, हर सेवा आपके पास।
Only WHATSAPP 9425823988
call-9691937250/- 9516003221

99 साल की मां की पीड़ा:

4 बहू-बेटों ने किया दर-बदर, घरेलू हिंसा का केस दर्ज

भोपाल। कहते हैं धरती पर माता-पिता भगवान का रूप होते हैं, लेकिन कुछ औलादें ऐसी होती हैं जो इस मान्यता को तार तार कर देती हैं। शायद ऐसी ही औलादों के लिए कहा गया है- पूत कपूत सुने हैं पर न माता सुनी कुमाता। ऐसा ही एक वाकया मध्य प्रदेश में सामने आया है जिसमें 99 वर्ष की मां को उसके 4 बेटे-बहुओं ने दर-ब-दर कर दिया है। बुजुर्ग मां के नाम 7-8 एकड़ खेती और मकान भी है, लेकिन बेटों ने हड़प लिया। इस मां के दो बेटे सरकारी नौकरी में है और दो खेती किसानी कर रहे हैं। बुजुर्ग मां का कहना है कि मरना और जीना तो भगवान के हाथों में है लेकिन तब बहुत बुरा लगता है कि जब बेटे-बहू ताने मारते हैं, कहते हैं- मर क्यों नहीं जाती ताकि पिंड छूटे। बेटा और बहूओं के द्वारा प्रताड़ित किए जाने पर 99 साल की बुजुर्ग महिला ने उनके खिलाफ घरेलू हिंसा और भरण-पोषण के लिए जिला कोर्ट में अर्जी लगाई है। बुजुर्ग मां ने पांच लाख रुपए के अलावा 20 हजार रुपए हर माह देने और पैतृक मकान में सम्मानपूर्वक रहने का अधिकार दिलाने की बात कही है।

घर से निकालने के बाद बेटों ने दी धमकी- वापस आई तो जान से मार देंगे

अशोकनगर निवासी 99 साल की बुजुर्ग महिला की सात संतानों में से बड़े बेटे की मौत हो चुकी है। बेटी की शादी कर दी। छोटा बेटा दिव्यांग है और इसी वजह से उसने शादी नहीं की। बाकी के चार बेटों ने उसकी संपत्ति पर कब्जा कर लिया है। बुजुर्ग महिला ने अपने बेटे-बहू, पोते सहित अन्य के खिलाफ मारपीट, गाली-गलौज, संपत्ति हड़पने और घर से निकाले जाने के आरोप लगाए हैं। बुजुर्ग ने बताया कि 2001 में पति की मौत के बाद अशोक नगर में मझले बेटे के साथ रह रही थी। धीरे-धीरे बेटे-बहू ने मकान, कृषि भूमि और सोने-चांदी के आभूषणों पर अपना कब्जा कर लिया। दूसरे बेटों ने इसलिए विरोध नहीं किया कि जैसे भी हो मां को रख तो रहे हैं। धीरे-धीरे बेटे और बहुओं का व्यवहार बदलने लगा। दूसरे बेटे भी रखने तैयार नहीं थे। दो माह पहले उन्हें यह कहकर घर से बाहर निकाल दिया गया कि अब आई तो जान से मार देंगे। यह बात जब भोपाल में रह रहे दिव्यांग बेटे को लगी तो वह अपने साथ भोपाल ले आया। चूंकि वह खुद लाचार है।

पति की बंदूक का लाइसेंस किया जाए रद्द-बुजुर्ग महिला ने अर्जी में एक बात कही है कि उनके पति के नाम बंदूक थी। जिसे चुपके से पोते ने अपने नाम करा ली। उस बंदूक का लाइसेंस भी रद्द किया जाए।

दो दिन सड़क पर कराहती रहीं, लेकिन नहीं ली सुध-बुजुर्ग महिला के वकील महेंद्र वर्मा ने बताया कि उनके बेटे-बहू ने कई तरह से उन्हें प्रताड़ित करते हैं। वह शुगर एवं बीपी की बीमारी ग्रसित है। बहू बेटों ने उनका इलाज कराने से मना कर दिया। उन्हें फेक्कर हो गया था तो कोई उन्हें अस्पताल नहीं ले गया। वह दर्द से कराहती रहीं, लेकिन किसी ने सुध नहीं ली। उन्हें घर से निकाल दिया गया तो वह दो दिन सड़क पर पड़ी रही। किसी तरह सबसे छोटे बेटे को जानकारी मिली जिसके बाद वह मां को अपने साथ भोपाल ले आया। उसने बड़े भाई से बात करने की कोशिश की, लेकिन उसे भी भगा दिया गया।

होम गार्ड्स को पुलिस के समान सुविधाओं की मांग

गृहमंत्री बोले- अफसरों के साथ करुंगा विचार

भोपाल। मध्य प्रदेश के गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा ने कहा कि होम गार्ड्स के जवानों की सेवा शर्तों से जुड़े मुद्दे पर विचार करने के लिए आज अधिकारियों से साथ बैठक करेंगे। उनकी मांगों का मामला केवल मेरे विभाग से जुड़ा नहीं है। उन्होंने कहा इस विषय के समाधान में गृह विभाग के अलावा वित्त विभाग की भी अहम भूमिका है। सरकार होमगार्ड जवानों की मांगों के प्रति पूरी तरह गंभीर है। गृहमंत्री मिश्रा परेड ग्राउंड में होम गार्ड्स स्थापना और नागरिक सुरक्षा की स्थापना दिवस कार्यक्रम के बाद पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। होम गार्ड्स को साल में 2 महीने की अनिवार्य छुट्टी देने पर नरोत्तम ने कहा कि ये आज से नहीं बल्कि लंबे समय से चला आ रहा नियम है, इसे लागू करने के लिए और अन्य मांगो को लेकर सब बैठक कर रहे है। होम गार्ड्स की लंबे समय से नियमित करने की मांग रही है।

इसके साथ ही पुलिस के समान वेतनमान और सभी सुविधाओं की मांग कर रहे हैं। पिछले साल इसे लेकर होम गार्ड्स ने बड़ा आंदोलन किया था। कमलनाथ सरकार के दौरान शिवराज सिंह चौहान और गोपाल भार्गव के होमगार्ड जवानों के समर्थन में दिए गए बयानों और ट्वीट पर कहा कि आपने इस तरफ ध्यान आकर्षित कराया है। हम होम गार्ड्स की मांगों पर विचार कर रहे हैं। इससे पहले गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा ने होम गार्ड्स परेड ग्राउंड में आयोजित होमगार्ड तथा नागरिक सुरक्षा स्थापना दिवस समारोह में परेड निरीक्षण, सलामी लेने के उपरांत प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया। गृहमंत्री ने इस मौके पर कहा कि आपदा के समय होमगार्ड के सैनिकों ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर कार्य किया है। सामाजिक समरसता के लिए किए गए होम गार्ड्स के प्रत्येक कार्य वंदनीय हैं।

इंदौर में बच्चे न होने के तानों से आहत दंपति ने खाया जहर, पति मृत पत्नी गंभीर

इंदौर। इंदौर (मप्र)। शादी के 10 साल बाद भी बच्चे न होने का ताना एक दम्पति को इतना आहत कर गया कि दोनों ने जहर खाकर आत्महत्या करने का प्रयास किया जिसमें पति की तो मौत हो गई और पत्नी गंभीर अवस्था में अस्पताल में भर्ती है। प्राप्त समाचार के मुताबिक इंदौर के राजाराम नगर निवासी विजय (40) पुत्र गुलाब लोखंडे और उनकी पत्नी ज्योति (35) ने शुक्रवार रात हरदा के नए बस स्टैंड के सामने स्थित लॉज में जहर खा लिया। निजी कंपनी में लेथ मशीन ऑपरेटर पति की मौत हो गई। पत्नी को गंभीर हालत में इंदौर रेफर किया गया है। गंभीर हालत में पत्नी ने पुलिस को बयान दिया कि उनकी शादी के 10 साल बाद भी बच्चे नहीं हैं। लोगों के तानों से परेशान होकर पति ने कोल्ड ड्रिंक तथा पत्नी ने नमकीन में मिलाकर जहर खा लिया। इसके साथ महिला ने पति पर कर्ज होने की बात भी कही है। टीआई प्रवीण चढोकार ने बताया कि विजय लोखंडे और ज्योति दोनों बाइक से ससुराल मुलताई जाने के लिए निकले थे। दोनों शुक्रवार रात 10 बजे सवेरा लाज में पहुंचे। मैनेजर से कहा कि रात का समय है और रास्ता सुनसान है। इसलिए रात रुकने के लिए कमरा चाहिए। इसके बाद दोनों कमरा नंबर 4 में रुके। सुबह लॉज के सफाई कर्मचारी ने रूम में देखा तो दोनों बेसुध पड़े थे। दोनों को ऑटो से जिला अस्पताल में ले जाया गया। जहां विजय को डाक्टरों ने मृत घोषित कर दिया।

ज्योति को पता ही नहीं पति की हो चुकी मौत

मृतक के बैतूल निवासी रिश्तेदार मारुति पड़लक ने बताया कि परिवार खुशमिजाज था। उसके परिवार में बुजुर्ग मां ईटाबाई हैं। दूसरी ओर ज्योति को अब तक नहीं पता कि उसके पति की मौत हो चुकी है। पुलिस व रिश्तेदारों ने पत्नी ज्योति को बताया कि विजय का इलाज चल रहा है। ज्योति बार-बार कहती रही कि एक बार उसे पति से मिलवा दो।

पूर्व मंत्री और सिंधिया समर्थक इमरती देवी को ग्वालियर में सरकारी बंगला खाली करने का मिला नोटिस

ग्वालियर। कांग्रेस छोड़कर बीजेपी का दामन थामने वाली ज्योतिरादित्य सिंधिया गुट की प्रबल समर्थक और कमलनाथ और शिवराज सरकार में मंत्री रहीं इमरती देवी को ग्वालियर में सरकारी बंगले को खाली कराने का नोटिस मिला है। अपने बयानों को लेकर हमेशा सुर्खियों में रहने वाली मध्यप्रदेश की पूर्व कैबिनेट मंत्री इमरती देवी को उनके पास कोई सरकारी पद न होने के कारण उनके मंत्री पद के दौरान ग्वालियर में आवंटित 44ए, झांसी रोड स्थित सरकारी बंगले को खाली करने का आदेश लोक निर्माण विभाग की ओर से दिया गया है। गौरतलब है कि इमरती देवी कांग्रेस सरकार में रहते हुए तत्कालीन मुख्यमंत्री कमलनाथ से ज्योतिरादित्य सिंधिया के समर्थन में भिड़ गई थीं और और बीजेपी में मंत्री रहते हुए जिन्होंने सार्वजनिक तौर पर यह बोल दिया था कि चुनाव जीतने के लिए हम कलेक्टर को भी अपनी तरफ कर लेंगे। यह उन विधायकों में से हैं, जो ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ कांग्रेस सरकार को गिरा कर बीजेपी में शामिल हुई थी और बीजेपी की टिकट पर पुनः उप चुनाव लड़ी थीं। लेकिन अपने प्रतिद्वंदी कांग्रेस उम्मीदवार के सामने वह हार गई। हार के बाद उन्हें अपने ग्वालियर स्थित सरकारी आवास को खाली कराने का नोटिस दिया गया है।

यूपी पंचायत चुनाव 2020: 19 दिन और फिर खत्म हो जाएगा ग्राम प्रधान का कार्यकाल, क्या होगा आगे अभी तय नहीं

कन्नौज। प्रधानों का कार्यकाल खत्म होने में अब सिर्फ 19 दिन बचे हैं। 25 दिसम्बर के बाद नए तरीके से काम होगा। वर्तमान प्रधानों का कार्यकाल बढ़ाया जाएगा या सचिव और एडीओ पंचायत का प्रशासक बनाया जाएगा, यह तय नहीं हुआ है। न ही शासन ने इस तरह का कोई आदेश जारी किया है। कन्नौज के आठ ब्लॉक क्षेत्रों में 504 ग्राम पंचायतें हैं। इनके प्रधानों का कार्यकाल 25 दिसम्बर को समाप्त हो जाएगा। उसके बाद भुगतान आदि का पॉवर प्रधान के पास नहीं रहेगा। ग्राम पंचायत अधिकारी, ग्राम विकास अधिकारी व एडीओ पंचायत के पास ही बजट खर्च करने की जिम्मेदारी आ जाएगी। हालांकि प्रधान संगठन पहले ही कार्यकाल बढ़ाने या उनको ही प्रशासक नियुक्ति करने की मांग कर चुके हैं। इसको लेकर ज्ञापन भी दिए गए। 19 दिन बचे होने के बाद भी अभी स्थिति स्पष्ट नहीं है।

नहीं होगी भुगतान में दिक्कत-डीपीआरओ जेके मिश्र ने बताया कि 25 दिसम्बर को प्रधानों का कार्यकाल समाप्त हो जाएगा। अब तक कोई ऐसी गाइड लाइन नहीं आई है, जिसमें यह जिक्र हो कि प्रशासन किसे बनाया जाएगा। अगर किसी ग्राम पंचायत का भुगतान बकाया होगा, तो दिक्कत नहीं होगी। इसके लिए औपचारिकता पूरी होनी चाहिए। कागज मजबूत होने चाहिए।

होना है लाखों का भुगतान, पड़ा है बजट-अब भी कई ग्राम पंचायतें ऐसी हैं, जहां लाखों रुपए के बिल का भुगतान होना है। प्रधानों का कार्यकाल खत्म होने के बाद भुगतान की दिक्कत हो जाएगी।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ट्रस्ट का कोरोना भगाओ परिवार बचाओ जन जागरण सप्ताह का छठवां दिन

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ट्रस्ट जिला ग्वालियर के जिला अध्यक्ष गोपाल सिंह तोमर जी ने बताया कि कोरोना भगाओ परिवार बचाओ जन जागरण सप्ताह के आज छठवें दिन संगठन के सभी लोगों ने यादव धर्म कांटा चौराहे पर बिना मास्क लगाए घूम रहे लोगों के हाथों को सैनिटाइज करवा कर मास्क वितरण किए। संगठन के जिला अध्यक्ष गोपाल सिंह तोमर जी ने आगे बताया कि यादव धर्म कांटे से लेकर चार शहर का नाका तिराहे तक लोगों को मुंह पर सदैव मास्क लगाकर रखना, समय-समय पर सैनिटाइजर से अपने हाथ सैनिटाइज करते रहना, अगर जरूरी काम नहीं है तो भीड़ वाले इलाके में जाने से खुद को बचाए रखना, आदि अनेक सावधानियां कोरोना संक्रमण के समय हम सभी को रखनी चाहिए,।

इस भयंकर बीमारी से खुद भी सुरक्षित रहें, औरों को भी सुरक्षित रहने दें।।

आज के इस कार्यक्रम में संगठन की तरफ से 550 मास्क वितरण किए गए।।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ट्रस्ट के जिला अध्यक्ष गोपाल सिंह तोमर जी ने बताया कि कल दिनांक 7 दिसंबर को अभियान का आखरी दिन शाम 4:00 बजे इंदरगंज चौराहे पर प्रशासन के साथ मिलकर हर आमजन को भारत सरकार के द्वारा कोरोना संक्रमण से बचने के लिए जो भी दिशा निर्देश मिल रहे हैं उन सभी का पालन करने के लिए जागरूक करते हुए सैनिटाइजर एवं मास्क वितरण किए जाएगा।

इस अवसर पर संगठन के जिला अध्यक्ष ने बताया कि क्योंकि अभी कोरोना बीमारी पूर्ण रूप से खत्म नहीं हुई है इसलिए भविष्य में इस प्रकार का अभियान चलाकर लोगों को जागरूक करने की आवश्यकता पड़ती है तो अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ट्रस्ट दोबारा से लोगों के बीच जाकर उन को जागरूक करने का एवं मास्क वितरण करने का काम करेगी। आज होने वाले कार्यक्रम में मुख्य रूप से संगठन के रविंद्र सिंह तोमर जी, राहुल प्रताप सिंह परमार जी, अरविंद परमार, मीनू सिंह तोमर, रवि तोमर, संदीप सिंह तोमर, गोपाल तोमर लोहा मंडी वाले, गोविंद सिंह चौहान, जल सिंह सिकरवार, सुरेंद्र सिंह परमार, इंद्र राज सिंह चौहान, सोबरन सिंह भदोरिया, रामवीर सिंह भदोरिया, श्रीमती मंजू सिंह सेंगर, निशा सिंह तोमर, कुसुम सिंह परमार, आदि अनेक लोग शामिल हुए।

गौशालाओं में गाय पहनेंगी जूट के कोट

खाएंगी गुड़ और लगाए जाएंगे पर्दे

लखनऊ। योगी सरकार ने सर्दी के मौसम में सूबे की गायों को ठंड से बचाने के लिए एक अहम फैसला लिया है। गो शाला में रहने वाली गायों को जाड़े से बचाने के लिए खाने में गुड़ दिया जाएगा और जूट और बोरी के बने कोट पहनाए जाएंगे। पशु पालन विभाग ने इसकी तैयारी कर ली है। इसके अलावा गौशालाओं में जमीन पर पुआल बिछाई जाएगी, ताकि कड़ाके की ठंड में गायों को जाड़े से बचाया जा सके। पुश पालन विभाग के संयुक्त निदेशक विद्या भूषण सिंह के मुताबिक प्रदेश में 5173 गौशालाएं हैं। यहां पर करीब 5 लाख 26 हजार से अधिक गायें रहती हैं। उन्होंने बताया कि जाड़े की शुरुआत के साथ ही गौशालाओं में पुआल बिछाने का काम शुरू कर दिया गया था। लगभग सभी गौशालाओं में गायों के बैठने के लिए पुआल बिछाने का काम पूरा हो गया है। इसके अलावा गायों के लिए जूट के बोरे से बने कोट की व्यवस्था की जा रही है। इससे गायों को ठंड नहीं लगेगी। साथ ही गौशालाओं को मोटी पॉलीथीन के पर्दे या तिरपाल से ढका जा रहा है, ताकि ठंडी हवाएं न घुसे। मोटे पर्दे और कवर बनाने के लिए जूट के थैलों व बोरों को एक साथ सिल कर तैयार किया जाता है। गाय के कोट बनाने के लिए उसी जूट के थैले का इस्तेमाल किया जाएगा, जिसे सर्दियों में गर्म रहने के लिए गायों को पहनाया जाएगा। जूट बैग जिला आपूर्ति विभाग की तरफ से प्रदान किए जाएंगे। कुछ जिलों में ग्राम पंचायतें मनरेगा बजट के तहत गाय के लिए कोट बनाएंगी और पशुशालाओं को पॉलीथिन और अन्य सामग्री के साथ कवर किया जाएगा।

अलाव के साथ खिलाया जाएगा गुड़-पशु पालन विभाग के अनुसार गायों को ठंड से बचाने के लिए गौशालाओं में अलाव की व्यवस्था भी की जाएगी। इसके अलावा गायों को सामान्य खाने के साथ गुड़ भी दिया जाएगा। इसकी व्यवस्था भी की जा रही है।

6 दिसंबर बाबरी विध्वंस की 28वीं बरसी आज, अयोध्या में सुरक्षा के कड़े इंतजाम

अयोध्या। 6 दिसंबर बाबरी विध्वंस की 28वीं बरसी पर आज अयोध्या में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। अयोध्या के चप्पे-चप्पे पर सीआरपीएफ, पीएसी, डाग स्काड, एटीएस व एसटीएफ की तैनात हैं। दरअसल विवादित ढांचा के विध्वंस के बाद हर वर्ष 6 दिसंबर को दोनों समुदाय कार्यक्रम करता है। छह दिसंबर को हिंदू समुदाय शौर्य दिवस तो मुस्लिम समुदाय काला दिवस के रूप में मनाता है। इस वर्ष किसी भी कार्यक्रम की जिला प्रशासन ने अनुमति नहीं दी है। दोनों समुदाय कोई कार्यक्रम नहीं करेंगे। 6 दिसंबर को लेकर कार्यक्रम करने वालों के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई होगी। विभिन्न इंटेलिजेंस यूनिट अफसर भी रख रहे हैं। होटल धर्मशाला रेलवे बस स्टेशनों समेत सार्वजनिक स्थलों पर जांच हो रही है। डीआईजी/एसएसपी एसपी सिटी सीओ इंस्पेक्टर समेत सभी अफसर चेकिंग कर रहे हैं। साइबर सेल के माध्यम से सोशल मीडिया पर भी खास नजर रखी जा रही है। अयोध्या डीआईजी दीपक कुमार का कहना है कि संत समाज और मुस्लिम समाज के धर्मगुरुओं ने दोनों समुदाय से किसी भी तरीके की कार्यक्रम को नहीं करने की अपील की है। कोविड संक्रमण को देखते हुए उसके नियमों को पालन करना जरूरी है। अगर कोई बिना परमीशन के कार्यक्रम किया जाएगा तो उसके खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी। पुलिस सोशल मीडिया पर भी पैनी निगाह रख रही है। यदि कोई धार्मिक दृष्टिकोण से भ्रामक खबर फैलाने की कोशिश करता है तो उसके खिलाफ भी कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

दूल्हों के लिए कोविड बॉक्स, कोरोना वायरस से बचने को कैसे निकल रही बारात

आजमगढ़। कोविड के माहौल में हो रहे वैवाहिक कार्यक्रमों में कुछ नजारे अलहदा हैं। दूल्हा घोड़े पर या फिर लग्जरी चारपहिया वाहनों में नहीं बल्कि कोविड बाक्स में आ रहे हैं। आजमगढ़ समेत पूर्वांचल के कई जिलों में यह बात अब आम है।

इस वर्ष शादी समारोहों में पहले जैसा उत्साह नहीं दिख रहा। बहुत से जोड़े दर्जनभर परिजनों की मौजूदगी में ही परिणय सूत्र में बंध गए। धूम-धड़ाके से शादी करने वाले लोगों ने अपनी तारीखें नवंबर-दिसंबर के लिए टाल दीं। इस बीच दिवाली के आसपास अचानक दिल्ली समेत देश के कई हिस्से में जब कोरोना की दूसरी लहर चली तो यूपी में भी लोग सहम गए। सरकार ने वैवाहिक कार्यक्रमों के लिए पहले 100 लोगों की सीमा तय की लेकिन जल्दी ही इसमें ढील दी तो उत्साह बढ़ गया। बावजूद इसके लोग सुरक्षा का पूरा ख्याल रख रहे हैं। खासकर, दूल्हे के लिए लोग अलग ढंग से व्यवस्था की जा रही है। एक रथनुमा वाहन पर बने पारदर्शी शीशे के डिब्बे में दूल्हे सवार होकर अपनी बारात ला रहे हैं। वर के लिए डिजाइन किए गए इस कोविड बाक्स को कहीं-कहीं प्लास्टिक से कवर किया जाता है। रंग-बिरंगे फूलों व झालरों से सजे इस रथ में बैठकर शान से दूल्हे राजा सुरक्षित अपनी दुल्हन को विदा कराने के लिए पहुंच रहे हैं। वैवाहिक समारोहों में जागरूक पुरुष सूट-बूट में तो नजर आ रहे हैं लेकिन उनके चेहरे अनिवार्य रूप से मास्क से ढके हुए दिखाई देते हैं। इतना जरूर है कि फोटो सेशन के दौरान मास्क हटा लिया जाता है। लेकिन महिलाओं पर फैशन भारी पड़ रहा है। महिलाएं मेकअप के बाद मास्क लगाना नहीं पसंद कर रही हैं। समारोहों में मास्क यदि महिलाओं ने कहीं पहना भी है तो परिधानों से उनका मैच करना आवश्यक शर्त है।

सीएम योगी ने यूपी के इन चार जिलों के लिए कही महत्वपूर्ण बात, कहीं आप का जिला भी तो नहीं

लखनऊ। कोरोना संक्रमण के प्रसार पर लगातार नियंत्रण बनाये रखने की जरूरत पर जोर देते हुये उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लखनऊ, वाराणसी, कानपुर और अयोध्या में विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश दिये। सीएम योगी ने अनलॉक व्यवस्था की समीक्षा करते हुये रविवार को कहा कि कहा कि कॉन्टैक्ट ट्रेसिंग और सर्विलांस सिस्टम में कोई ढिलाई न बरती जाए। यही वह कड़ी है, जिससे कोविड-19 के प्रसार को रोकने में मदद मिली है।

उन्होंने लखनऊ, वाराणसी, कानपुर और अयोध्या में विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश दिए। उन्होंने कोविड अस्पतालों में सीनियर फैकल्टी चिकित्सकों को राउण्ड लेने के निर्देश देते हुए कोविड अस्पतालों में हाई फ्लो नेजल कैन्युला (एचएनएफसी) की व्यवस्था को सुदृढ़ के लिए भी कहा। उन्होने कहा कि कोविड-19 संक्रमण से बचाव के लिये सभी कदम प्रभावी ढंग से लागू किए जाएं। लोगों को जागरूक बनाने के लिए पब्लिक एड्रेस सिस्टम के माध्यम से इसकी रोकथाम तथा कोरोना प्रोटोकॉल के सम्बन्ध में निरन्तर जानकारी दी जाए। लोगों को सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करने के लिये प्रेरित किया जाए। साथ ही, उन्हें मास्क पहनने और सेनिटाइजेशन के सम्बन्ध में भी निरन्तर जानकारी दी जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि कोविड चिकित्सालयों की व्यवस्थाओं को चुस्त-दुरुस्त बनाए रखा जाए। यह सुनिश्चित किया जाए कि विशेषज्ञ डॉक्टर कोविड वॉर्ड में नियमित राउण्ड लें। अस्पतालों में दवाओं, मेडिकल उपकरणों तथा ऑक्सीजन की पर्याप्त उपलब्धता रहे। यह सुनिश्चित किया जाए कि कोविड-19 की मेडिकल टेस्टिंग की प्रभावी व्यवस्था निरन्तर बनी रहे। इसके लिए प्रतिदिन पर्याप्त संख्या में आरटीपीसीआर तथा रैपिड एण्टीजन टेस्ट किये जाएं।

आठ दिसंबर भारत बंद: किसान आंदोलन पर सीएम योगी ने अधिकारियों को दिया यह आदेश

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ किसान आन्दोलन के मद्देनजर सतर्क रहने को कहा है। उन्होंने सभी जिलों के प्रशासन को संवाद बनाकर कार्य करने के निर्देश दिए। उन्होंने प्रदेश में पेट्रोलिंग बढ़ाने के निर्देश देते हुए कहा कि प्रदेश के किसी भी क्षेत्र में सड़कों पर जाम न लगने पाए। मुख्यमंत्री योगी ने नोएडा, गाजियाबाद क्षेत्र में विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश दिए।

ग्वालियर शहर में आसान किस्तों में बिना ब्याज के प्लॉट खरीदने का सुनहरा मौका ....

नववर्ष के उपलक्ष्य मे भारी छूट 25% की जगह 10% देकर के रजिस्टर्ड एग्रीमेंट करायें शेष राशी आसान किस्तों में दें।

सौम्या प्रोपर्टी डीलर

प्लॉट खरीदने व निवेश के लिये सम्पर्क करें

हमारी सुविधाऐं

- विशाल पार्क
- सीवर लाईन
- चौड़ी सड़क आर.सी.सी. रोड
- मेन गेट पर गार्ड की सुविधा
- गेट बंद कॉलोनी
- सी.सी.टी.वी. कैमरा सुविधा
- भव्य मन्दिर
- प्रत्येक प्लॉट पर नल कनेक्शन
- लाईट सुविधा
- बच्चों के लिये पार्क

प्लॉट की कीमत का मात्र 10% देकर रजिस्टर्ड एग्रीमेंट करायें एवं शेष राशि 90% बिना ब्याज के दें

मो. 9301759475, 9713014463, 9111503705

भारत प्रिंटर्स, पिन्टो पार्क, ग्वा.

क्या सच में मिल रहे है सबको ये अधिकार

10 दिसंबर पूरी दुनिया में मानवाधिकार दिवस के रूप में मनाया जाता है। 11948 को संयुक्त राष्ट्र की साधारण सभा ने संयुक्त राष्ट्र की मानवाधिकारों की विश्वव्यापी घोषणा को अंगीकृत किया गया। जिसमें विचार, विवेक, धर्म, स्वतंत्रता तथा कहीं भी सभा आयोजन से लेकर सरकार बनाने तक के अधिकारों की जोगवाई मानव अधिकार कानून के तहत की गई है। हर मनुष्य के लिए मानव अधिकार सार्वभौमिक है जो मानव व्यवहार के मानकों को परिभाषित करता है। नगरनिगम से लेकर आंतरराष्ट्रीय कानून तक मानव अधिकार सुरक्षित है। पर जिस समाज में आज हम जी रहे है वहाँ तो हर तरफ़ गरीबी, भूखभरी और उत्पीड़न ही दिख रहा है। कहाँ है वे सारे अधिकार जिसका हर मनुष्य हकदार है। हर तरफ़ समाज में फैली असमानता का शोर ही सुनाई दे रहा है।

21वीं सदी में भी कुछ स्त्रियों के साथ कुछ नहीं बदला यातना, प्रताड़ना और क्रूरता से कुचली जाती है। बच्चों को आगवा करके भीख मंगवाने की गतिविधि जोर शोर से चल रही है, किसानों की खस्ता हालात के चलते खुदकुशी और आंदोलनों की भरमार बढ़ रही है, मज़दूरों का शोषण तो कहीं धर्मांधता के चलते समाज में कट्टरवाद और लव जेहाद जैसे गहरे मुद्दों पर धमासान होते रहते है। फुटपाथ पर कातिल ठंड में सड़कों पर सोते हुए ठिठुर कर जो लोग मर जाते हैं क्या उनके कोई मानव अधिकार नहीं है। शहीदों के परिवार के लिए, भूख से मरने वाले मजदूरों के लिए, गरीबी के कारण जो पढ़ाई नहीं कर पाते उनके लिए और उत्पीड़न की शिकार महिलाओं के लिए क्या मानव अधिकार कानून लागू नहीं होता। कितने मुद्दें गिनवाएं सरकार मानव अधिकार की बातें तो बड़ी जोर-शोर से करती हैं मगर जब देने की बारी आती है तो पीछे

खिसकने लगते हैं। राज नेताओं को पता है कि यदि लोगों को उनके अधिकार मिल गये तो उनकी दुकान बन्द हो जायेगी। हमारे देश के संविधान में मानव को बहुत सारे अधिकार दिये गये हैं मगर उन पर अमल नहीं हो पाता है। मानव अधिकारों की रक्षा के लिये बनाये गये कानून महज कागजो में सिमट कर ही रह गए है। वर्तमान समय में देश में जिस तरह का माहौल आए दिन देखने को मिलता है ऐसे में मानवाधिकार और इससे जुड़े आयामों पर सरकार को गौर करने की जरूरत है। देश भर में मॉब लिंचिंग की घटनाएँ, बच्चियों के साथ हो रहे बीभत्स कृत्य देश में मानवाधिकारों की धज्जियाँ उड़ाते दिखते हैं।

ह॥त्रष्ट का काम है कि वह समाज में अंतरनिहित असुरक्षा की भावनाओं को मिटाने के लिए समाज में व्याप्त आंतरिक कुरीतियों एवं तंत्र में व्याप्त बुराइयों को मिटाएं तथा मानव अधिकारों से जुड़े गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, कुपोषण, नशा, भ्रष्टाचार, विदेशी अतिक्रमण, शस्त्रों की तस्करी, आतंकवाद, असहिष्णुता, रंगभेद, धार्मिक कट्टरता वगैरह मुद्दों का योजनाबद्ध तरीके से निर्मूलन करें। समाज में होने वाले मानव अधिकारों के उल्लंघन के प्रति समाज के हर व्यक्ति को जागरूक होने की जरूरत है अपने अधिकार के लिए अगर मानव ही जागरूक नहीं है तो फिर मानव अधिकार कानून का औचित्य क्या रह जाता है? संक्षिप्त में कहा जा सकता है कि ''मानव जीवन के समग्र विकास के लिए सभी अधिकारों की सुरक्षा एव क्रियान्वयन अनिवार्य है। हर नागरिक को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होकर कानूनन हक का उपयोग करके अपना विकास करना चाहिए। और सरकार को इस न्यायिक प्रक्रिया को देश के हर नागरिक को समझना चाहिए और हर अधिकार देने चाहिए।

(भावना ठाकर,बेंगुलूरु) म्रभावु

अब तो पांव लगे हैं जमने

लिखते-लिखते लिख डाले हैं
जीवन के कितने ही पन्ने
फिर भी जीवन अनसुलझा है
न जाने कितने हैं लिखने..।।
जीवन में हर कोण बनाकर
जीवन गणित लगाया है
फिर भी हैं सवाल कुछ बाकी
कैसे हल होंगे ये सपने..।।
दूर-दूर रह पास-पास रह
हर आभास किया जीवन में
नहीं समझना आसां है कुछ
किसे कहें ये ही अपने..।।
हर पथ पर था पथिक बना मैं
चला रास्ता जैसा भी था
कुछ सहपथिक बने मेरे भी
कुछ पीड़ा भी पड़े हैं सहने..।।
गिर-गिर कर फिर उठ जाना ही
मूल मंत्र जीवन में सीखा
मिला मुझे साहस ही इससे
अब तो पांव लगे हैं जमने..।।
अब तो पांव लगे हैं जमने..।।

विजय कनौजिया
ग्राम व पत्रालय-काही
जनपद-अम्बेडकर नगर (उ0 प्र0)

बाकी है

बाकी है अभी जीना
क्योंकि बाकी है अभी
तुमसे फिर से मिल
मोहब्बत करके मर मिटना।
बाकी है अभी
तुमसे मिलकर मुस्कुराना
क्योंकि बाकी है अभी
तुम को अपना बना कर
अपने सीने से लगाना।
बाकी है अभी
तुम से आंखों से आंखें मिलाना
क्योंकि बाकी है अभी
बहते अश्कों को छुपा कर
किसी और का बतलाना।
बाकी है अभी
कुछ हसरतें नाजुक से दिल की
क्योंकि बाकी है अभी
बिखरी हुई कुछ
तेरी यादें इस दिल में।

राजीव डोगरा विमल
कांगड़ा हिमाचल प्रदेश (युवा कवि लेखक)
(भाषा अध्यापक)
गवर्नमेंट हाई स्कूल, ठाकुरद्वारा।

ग्लोबल वार्मिंग : भीषण तबाही का संकेत

ईश्वर ने प्रकृति की सृष्टि करके मानव को एक अलौकिक उपहार दिया है।वैसे तो सम्पूर्ण जीव जन्तुओं का इस पर समानाधिकार है।सभी इस ईश्वर प्रदत्त प्रकृति का उपयोग एवं उपभोग कर सकते हैं।किन्तु मानव समस्त जीवों से बुद्धिमान होने के कारण इसका तरह - तरह से उपयोग करता है। यह समस्त सृष्टि ईश्वर के विधान द्वारा निर्धारित नियमों से संचालित होती है।यदि हम उसे ध्यान से समझें,सोचें,चिन्तन -मनन करें तो आध्यात्मिक दृष्टि से हमें वही विज्ञान नजर आयेगा। ये सम्पूर्ण प्रकृति विधि-विधान से ही चल रही है।

दरअसल भूमण्डलीय करण भी मानव की की हुई ज्यादतियों का परिणाम है। भूमंडलीय ऊष्मीकरण का आशय पृथ्वी और महासागर के औसत तापमान से है। मौसम सदैव परिवर्तनशील होते हैं।किन्तु कुछ वर्षों से यह अनुभव किया जा रहा है कि मौसम के पर्वर्तन में कुछ अनिश्चितता आई है।कभी अत्यधिक वर्षा होने लगती है कभी आशा के विपरीत भीषण गर्मी पड़ने लगती है।जिन स्थानों मे वर्षा कम होती थी या नहीं होती थी वहाँ इतनी अधिक वर्षा हो जाती है कि वहां का जन जीवन ही अस्त व्यस्त हो जाता है।बाढ़ जैसी समस्यायें उत्पन्न हो जातीं है।ऐसे ही अत्यधिक ठंड पड़ने से भी अनेक समस्यायें आ जाती हैं। मौसम के इसी अनियमित बदलाव एवं जलवायु की अनिश्चितता का मूल कारण भूमंडलीय ऊष्मीकरण है।भूमंडलीय ऊष्मीकरण का सीधा सम्बन्ध पृथ्वी के बढ़ते हुये तापमान से है। पर्यावरण प्रदूषित होने से कार्बनडाई आक्साइड और ग्रीनहाउस गैसों में भी बृद्धि हुई है।सूर्य

श्याम सुंदर श्रीवास्तव 'कोमल'

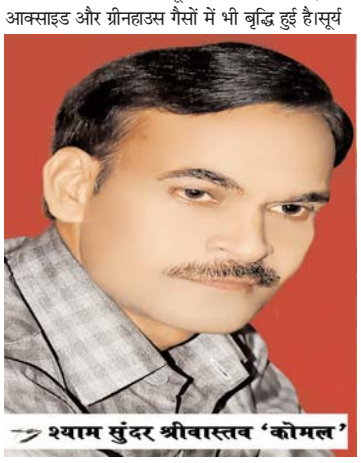

से जो अनंत किरणें पृथ्वी तक आती हैं वे पृथ्वी से टकरा कर परावर्तित हो जाती हैं।सूर्य से आई उन अनंत किरणों के साथ सूर्य की ऊष्मा भी लौट जाती है। कार्बनडाई आक्साइड और ग्रीनहाउस गैसें इस ऊष्मा को रोकने में मददगार होती है।वे सूर्य की जीवनोपयोगी ऊष्मा को पूरी तरह लौटने नहीं देतीं।क्योंकि पृथ्वी में जन जीवन सुचारु रूप से संचालित रहने के लिये इस ऊष्मा का होना आवश्यक है।नहीं तो ये पूरी पृथ्वी वर्फ की मोटी एव ठंडी चादर से ढँक जायेगी। किन्तु जब ये गैसें अधिक मात्रा में ऊष्मा को रोक लेती हैं तो पृथ्वी का तापमान बढ़ जाता है।और भूमंडलीय ऊष्मीकरण की ज्वलनशीलता बढ़ जाती है।जो एक भीषण तबाही का रूप धारण कर लेती है। मानव द्वारा किये गये अनैतिक कार्यों से यह भीषण समस्या औरअधिक व्यापक रूप में हमारे सामने आ खड़ी हुई है।वृक्षों की कटाई,कारखानों और वाहनों का विषैला धुँआ,अत्यधिक विजली, पेट्रौल का प्रयोग,बढ़ती जनसंख्या आदि के कारण पर्यावरण प्रदूषित हुआ है।प्रकृति का संतुलन बिगड़ा है।इन गैसों में बृद्धि हुई है।जब इन गैसों की मात्रा में बृद्धि होगी तो इनके द्वारा रोकी जाने बाली सूर्य की ऊष्मा में भी बृद्धि होगी,सो हुई।जिससे भूमंडलीय ऊष्मीकरण की समस्या हमारे सामने विनाशकारी रूप में मुँह फाड़े खड़ी है। अगर मानव अभी भी नहीं सुधरा तो यह समस्या अपनी विशाल ऊष्मा की ज्वालाओं से जन जीवन को तबाह कर देगी।

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव कोमल
व्याख्याता-हिन्दी
अशोक उ0मा0विद्यालय,
लहार,जिला भिण्ड (म0प्र0)

जो दोस्त हैं, वही दुश्मन तो नहीं

मत समझो कि ये घना कोहरा है
तुम्हारे ख्वाबों पे सख़्त पहरा है
जो दोस्त हैं, वही दुश्मन तो नहीं
सियासत का राज़ बहुत गहरा है
खेल तो कोई और ही खेल रहा है
किसान बस अदना सा मोहरा है
फकीरी की हद नहीं है तो और क्या
लोकतंत्र गरीबों की लाश पे ठहरा है
चीखों से अब सत्ता नहीं हिला करते
कहने वाला गूँगा,सुनने वाला बहरा है
कैसे पहचान पाओगे इस गफलत में
आखिर सच का कहाँ अपना चेहरा है

सलिल सरोज

सम्पादकीय

वैक्सीन की ओर

भारत को अपने वैक्सीन का इंतजार है और जल्दी ही वह वैक्सीन तैयार करने में सफल हो जाएगा। शुक्रवार को सर्वदलीय बैठक में प्रधानमंत्री ने जो विश्वास जताया, उसकी रोशनी में वैज्ञानिकों को पूरी त्वरा के साथ लक्ष्य तक पहुंचने के प्रयास करने चाहिए। देश में कोरोना के मामले एक करोड़ की ओर बढ़ रहे हैं और जान गंवाने वालों की संख्या एक लाख चालीस हजार तक पहुंचने वाली है। देश में एक मुकम्मल वैक्सीन की जरूरत है। प्रधानमंत्री ने सर्वदलीय बैठक को संबोधित करते हुए स्पष्ट कर दिया कि उन्हें पूरा विश्वास है, भारतीय वैज्ञानिक वैक्सीन बनाने में सफल हो जाएंगे। करीब आठ टीके विकसित किए जा रहे हैं और वे परीक्षण के अलग-अलग चरण में हैं। ज्यादातर टीकों का निर्माण भारत में भी होगा। भारत के तीन टीके भी परीक्षण के अलग-अलग चरण में हैं। पुणे, अहमदाबाद और हैदराबाद में विशेष रूप से वैक्सीन विकास का काम चल रहा है और प्रधानमंत्री इन प्रयासों से निरंतर संपर्क में हैं। शायद इसी आधार पर उन्होंने कहा कि सबसे सस्ते और सुरक्षित टीके पर दुनिया की निगाह है। विशेषज्ञों का मानना है कि वैक्सीन का इंतजार लंबा नहीं होगा, बस अब कुछ ही हफ्तों की बात है। सर्वदलीय बैठक में प्रधानमंत्री का उत्साह निश्चित ही वैक्सीन की खोज को बल प्रदान करेगा। फिर भी किसी भी प्रकार की अनुचित जल्दी या जोखिम से बचते हुए ही भारत को अपनी वैक्सीन के साथ सामने आना चाहिए। चूंकि भारत दवा निर्माण में अग्रणी है, चूंकि यहां बनी दवाइयां अपेक्षाकृत किफायती होती हैं, इसलिए यहां बनी वैक्सीन भी दुनिया को राहत पहुंचाएगी। खासकर, दक्षिण एशिया के देशों, दुनिया के अन्य गरीब व विकासशील देशों को निश्चित ही भारत से उम्मीद होगी। सर्वदलीय बैठक में प्रधानमंत्री ने जो विश्वास जताया है, उसकी गूंज पूरी दुनिया में जाएगी। वस्तुत- अभी जो टीके बाजार में आते दिख रहे हैं, वे महंगे होंगे, लेकिन भारत के टीके से सस्ता रहने की उम्मीद है, दूसरी ओर, सरकारों को अपने स्तर पर भी वैक्सीन की कीमत के बारे में सोचना शुरू कर देना चाहिए। सर्वदलीय बैठक में विमर्श की दिशा इस ओर भी थी। देश के तमाम राज्यों में वैक्सीन का तार्किक या एक समान मूल्य रखना होगा। चुनौती उन इलाकों या राज्यों में भी आएगी, जहां राजनीतिक पार्टियों ने मुफ्त टीके का वादा कर रखा है। मुफ्त टीके का अर्थ है, सरकार पर ज्यादा बोझ पड़ेगा। ऐसे में, यह व्यावहारिक रूप से जरूरी है कि भारत में जो टीका बने, वह सस्ता हो।

सपने

सपने हमारे इतने हैं कि पैरों पर है खड़े।
ऊँचे इतने है कि आसमां से बड़े।
सूरज नया आ गया सवेरा लिए।
हर दिशा रोशन हुई हमारे लिए।
चाँद को छू रही आवाज है।
ये हमारे ख्वाबों की परवाज है।

लेखिका - पल्लवी गुप्ता
गोहद जिला भिंड मध्यप्रदेश

बच्चे को इस प्रकार पढ़ाएं

बच्चों को पढ़ाना भी एक कला है जिसमें संयम की जरुरत रहती है। अधिकतर आमतौर पर माँ-बाप को पता ही नहीं होता कि बच्चे को पढ़ाने का सही तरीका क्या है। उन्हें लगता है कि बच्चे को डाँट देना या मार देना ही एक विकल्प है ताकि डरकर वह पढ़ाई करने लगे, लेकिन सवाल ये है कि क्या वाकई यह सही तरीका है? डाँट या मार के डर से बच्चों का मन पढ़ाई से और दूर भागने लगता है। बच्चे को डराकर आप उसे अपने सामने तो पढ़ने के लिए मजबूर कर सकते हैं, लेकिन आपकी नजर हटते ही वह पढ़ाई को बोझ समझकर टाल देता है। बच्चों के साथ सख़्ती बरतना बिलकुल भी सही विकल्प नहीं है। एक बार अगर उसके मन से आपकी डाँट या मार का डर निकल गया, तो फिर वो आपकी बात मानना और इज्जत करना भी छोड़ देगा।

इसलिए पहले ये जान लें कि बच्चे को पढ़ाते वक़्त आपको क्या नहीं करना है-

- **बच्चे पर कभी हाथ ना उठाएं:** अगर आपको लगता है कि आपके मारने से बच्चा कुछ पढ़ लेगा, तो आप गलत हैं। आपके मारने से बच्चे के मन में पढ़ाई के प्रति और ज्यादा रोष जागृत होगा। और मार के डर से जितना उसे आता है, वो भी भूल जाएगा।
- **बच्चे को डराएं, धमकाएं नहीं:** कुछ माता-पिता बच्चों को डराते धमकाते हैं कि अगर पढ़ाई नहीं की तो आज खाना नहीं मिलेगा या स्टोररूम में बंद कर देंगे या फिर स्कूल से नाम कटवा देंगे। अपने मासूम बच्चे पर ये सब इमोशनल हथियार ना आजमाएं। इसका बच्चे के कोमल मन पर बुरा असर पड़ता है।
- **बच्चे की बातों को अनसुना ना करें**
  अगर आपका बच्चा आपको कुछ बताना चाहता है या आपसे कोई प्रश्न पूछना चाहता है तो धैर्य से उसकी बात सुने। उसे सही व तार्किक जवाब दें।
- **बच्चे को किसी और के सामने डाँटे नहीं:** बच्चे को कभी भी उसके दोस्तों या अपने रिश्तेदारों या घर में आए मेहमानो के सामने डांटें नहीं। इससे बच्चा अपमानित महसूस करता है। परिणामस्वरूप बच्चे का मनोबल गिरता है और उसका पढ़ाई में मन नहीं लगता।

आंदोलन की चिंता

किसानों और केंद्र सरकार के बीच बातचीत न केवल सुखद, बल्कि स्वागतयोग्य है। जहां सरकार तीनों कृषि कानूनों के बचाव में जुटी है, वहीं किसान अपनी आपत्ति पर अड़े हैं। गुरुवार दोपहर किसानों की ओर से कृषि सचिव को एक खाका सौंपा गया। एपीएमसी ऐक्ट के 17 बिंदुओं पर, एसेंशियल कमोडिटी ऐक्ट के आठ बिंदुओं पर और कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग के 12 बिंदुओं पर उनकी असहमति है। आधिकारिक रूप से किसानों को तीनों कृषि कानूनों के 37 बिंदुओं पर सरकार से सफाई चाहिए। अगर सरकार जवाब दे पाती है, तो विवाद सुलझ जाएगा, नहीं तो ज्यादा गुंजाइश यही है कि किसानों का आंदोलन आने वाले दिनों में और बड़े रूप में सामने आए। हकीकत यही है कि किसानों के पक्ष में आंदोलनकारियों और आंदोलन को समर्थन देने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। देश में कुछ दूसरी जगहों पर भी लोगों ने प्रदर्शन करके किसानों के प्रति समर्थन दर्शाया है। सबसे चिंता की बात है, ट्रांसपोर्टरों के शीर्ष संगठन ऑल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस ने 5 दिसंबर से उत्तर भारत में परिचालन बंद करने की चेतावनी दी है। उत्पादों और रोजमर्रा की चीजों के परिवहन में अगर समस्या आई, तो देश में बढ़ती महंगाई को और बल मिलेगा। दिल्ली की सीमाओं पर जाम की स्थिति बनने से वैसे ही समस्याएं बढ़ने लगी हैं। जो लोग घंटों जाम में फंस रहे हैं, उनसे कोई पूछे, आंदोलन क्या होता है? देश की जमीनी हकीकत अगर देखें, तो कोरोना और आर्थिक मंदी के समय किसान आंदोलन न केवल दुखद, बल्कि चिंताजनक है। समाज के किसी एक वर्ग का भला होना, भले ही पूरे देश का भला होना हो, लेकिन तात्कालिक रूप से जो नुकसान उठाने पड़ रहे हैं, वे किसी के भी हित में नहीं हैं। अव्वल तो यह आंदोलन राष्ट्रीय राजधानी तक पहुंचने से पहले ही सुलझा लिया जाता। आज जो वार्ता हो रही है, वह पहले भी संभव थी, पर किसानों को दिल्ली सीमा पर चढ़ आने के लिए एक तरह से खुला छोड़ दिया गया। आज खामियाजा पूरी दिल्ली भुगत रही है। किसी भी मांग के लिए दिल्ली पर चढ़ आने की प्रवृत्ति का भला कौन बचाव करेगा? हमें सोच लेना चाहिए, राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में ऐसे प्रदर्शनों की संख्या बढ़ी, तो कौन जवाबदेह होगा? लगातार संकेत मिल रहे हैं कि आंदोलन का आकार और प्रकार, दोनों विस्तार की ओर अग्रसर हैं। एक बड़ा खतरा यह भी है कि आंदोलन की मांगें कहीं बढ़ न जाएं। मांगों की सूची कहीं जटिल न होती जाए। किसान नेताओं को यह ध्यान रखना होगा कि वे जिस सद्भावना के साथ घर से चले थे, वह बनी रहे। आंदोलन में शांति व्यवस्था बनी रहनी चाहिए, किसी भी स्थिति में पुलिस या सरकार को उग्रता के लिए मजबूर नहीं करना चाहिए। राष्ट्रीय राजधानी में ऐसा आंदोलन कोई प्रशंसनीय बात नहीं है। आंदोलन की लोकप्रियता तभी तक है, जब तक कि लोगों को ज्यादा परेशानी नहीं हो रही। किसानों के साथ ही सरकार को भी समस्या के वास्तविक समाधान पर ज्यादा समझदारी से काम करना होगा। अब तो इस आंदोलन पर पूरी दुनिया की निगाह है।

मां की अंतरात्मा...

न जाने कितने आह निकली होगी
तुम्हारी जुबान से
कितना दर्द हुआ होगा
असहनीय पीड़ा असीम यातनाएं
मैं सोचकर ही सिहर उठती हूं
वह दृश्य
तुम कैसे सह पाई होगी वह परिदृश्य
सारे भाव तप गए होंगे द्रोह के
सारी कोशिशें लह गए होंगे विद्रोह के
तुम अपनी जली अधजलि
हृदय की सारी बातें बता दो
किस समय तुम्हारी दिल की
धड़कन ने धोखा दिया
एक मौका तो देते दूर से आवाज लगाते
मैं काली बनकर आती
मैं दुर्गा बनकर आती
हाथों में खंजर होता त्रिशूल होता
तलवारे होती खप्पर भी साथ लाती
और उसका एक बूंद भी
लहू नीचे नहीं गिरने देती
उस नारी भक्षक के लिए
नर पिशाच के लिए
उस रावण के लिए
कितने रावण के पुतले फूंक चुके
अंध भक्तों ने
हकीकत में जो रावण बन खून रहा है
अरे नामर्दो फूंकने की जिद है
तो फूंक डालो
बलात्कारियों को जो धरती का अभिशाप है
अभी-अभी एक चीख़ सुना है
चित्कार सुना है
मेरी आत्मा तृप्त हो गई
उस अमंगल मरुभूमि पर
यह धरती सदियों से प्यासी थी
इन दरिंदों के खून के
धरती भी तृप्त हो गई
कोटि-कोटि नमन
उन कानून के रक्षकों को
अभी भी सैकड़ों बलात्कारी
सारे आम घूम रहे हैं या
जेल में ऐश कर रहे हैं
आशा करती हूं
उनको भी यही सजा मिलनी चाहिए ।

स्वरचित एवं मौलिक
मनोज शाह मानस
सुदर्शन पार्क मोती नगर
नई दिल्ली

ख़ुशी की तलाश

ख़ुशी की तलाश में,
आज इतने बढ़ चले।
ज़िन्दगी तो मिली हमें,
पर ज़िन्दगी मिली नहीं।
क्या थे अरमान दिल के,
आज बयाँ कर चले।
ज़िन्दगी तो मिली हमें,
पर खुदसे दूर हो चले।
ख़ुशी पाने की चाह में,
आज अपने छोड़ चले।
थामा हाथ बचपन का,
पर बचपन छोड़ चले।
एहसास तो तब हुआ,
जब दोस्त मिले गले।
अनजानों की तलाश में,
हम अपने छोड़ चले।
ख़ुशी की तलाश में,
आज इतने बढ़ चले।
ज़िन्दगी तो मिली हमें,
पर ज़िन्दगी नहीं मिली।

गीतिका पटेल गीत
बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

अभिषेक कपूर की वाणी कपूर ने की प्रशंसा

बॉलीवुड अभिनेत्री वाणी कपूर ने अपने नए सोशल मीडिया पोस्ट में निर्देशक अभिषेक कपूर की प्रशंसा की है। अभिनेत्री ने फिल्म के सेट पर काम करने के दौरान उनकी एक झलक शेयर करने के लिए इंस्टाग्राम का सहारा लिया है। उन्होंने शेयर तस्वीर को कैप्शन देते हुए लिखा कि भविष्य की तरह देख रहे हैं .. तारकीय निमार्ता के साथ। बता दें कि वाणी फिलहाल अभिषेक कपूर के नए रोमांटिक ड्रामा फिल्म 'चंडीगढ़ करे आशिकी' की शूटिंग कर रही हैं, जिसमें अभिनेता आयुष्मान खुराना भी हैं। इस बीच वाणी की तीन बड़ी फिल्में आ रही हैं। वह फिल्म 'बेल बॉटम' में अक्षय कुमार के साथ नजर आएंगी और वह अभिषेक कपूर की फिल्म के अलावा रणबीर कपूर के साथ फिल्म 'शमशेरा' में भी नजर आएंगी।

एआर रहमान चुने गए बाफ्टा ब्रेकथ्रू इंडिया के राजदूत

ऑस्कर और ग्रैमी विजेता भारतीय संगीतकार ए.आर.रहमान को बाफ्टा ब्रेकथ्रू इंडिया के राजदूत चुना गया है। राजदूत बनने पर उन्होंने कहा कि मुझे, बाफ्टा के साथ काम करने को लेकर खुशी हो रही है, ताकि भारत को फिल्म, गेम्स और टेलीविजन में कुछ अद्भुत प्रतिभाएं मिल सके। यह होनहार कलाकारों के लिए विश्व-प्रसिद्ध संगठन द्वारा समर्थित एक अनूठा अवसर है, जो न सिर्फ दुनिया भर के अन्य प्रतिभाशाली क्रिएटिव्स के साथ जुड़ने के लिए मौका देगा, बल्कि बाफ्टा-विजेताओं और नामांकित व्यक्तियों द्वारा सलाह प्राप्त करने का भी मौका देगा।

मैं भारत से चुनी गई शानदार प्रतिभा को वैश्विक मंच पर दिखाने के लिए उत्सुक हूं। बाफ्टा के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अर्मांडा बेरी ने कहा कि मैं हमारे शानदार राजदूत एआर रहमान के अमूल्य समर्थन के लिए अविश्वसनीय रूप से आभारी हूं, जो अपने रचनात्मक कार्यों में उद्योग के लीडर हैं और नई प्रतिभा की पहचान और पोषण के लिए हमारे जुनून को साझा करते हैं। ब्रिटिश एकेडमी ऑफ फिल्म एंड टेलीविजन आर्ट्स (बाफ्टा) ने साझा किया कि नेटफ्लिक्स द्वारा समर्थित बाफ्टा ब्रेकथ्रू इंडिया के लिए अब आवेदन खुले हैं। भारत में पहल के हिस्से के रूप में ब्रिटिश और भारतीय उद्योग विशेषज्ञों की एक जूरी साल भर के मेंटॉरिंग और गाइडेंस प्रोग्राम में हिस्सा लेने के लिए पूरे भारत से पांच प्रतिभाओं का चयन करेगी। चुनी गई प्रतिभा ब्रिटिश और भारतीय क्रिएटिव उद्योगों से भी जुड़ेगी और सीखेगी, और विश्व स्तर पर बाफ्टा निर्णायक कलाकारों के रूप में पदोन्नत की जाएगी। बता दें कि यह पहल भारत में बाफ्टा के शुरूआती कदमों को चिह्नित करती है। टैलेंट हंट पहल भारत में फिल्म, खेल या टेलीविजन में काम करने वाली पांच प्रतिभाओं को पहचानने और उनका पोषण करने में सक्षम होगी। बाफ्टा ब्रेकथ्रू ब्रिटेन में 2013 से और चीन में 2019 से चल रहा है, लेकिन इस साल यह पहल भारत से प्रतिभा को पहचान रही है।

मार्च से नवंबर का सफर महज 15 मिनट बीता: काजोल

बॉलीवुड अभिनेत्री काजोल ने कोरोना वायरस को लेकर अपनी मन की बात शेयर करने के लिये इंस्टाग्राम का सहारा लिया है। उन्हें लगता है कि कोरोनावायरस लॉकिडाउन के चलते मार्च से नवंबर केवल 15 मिनट का सफर था। उन्होंने कहा कि मार्च से नवंबर सिर्फ 15 मिनट लगे। हैशटैग जस्ट 2020 थींग्स। हैशटैग इट्स दिसंबर। बता दें कि इससे पहले काजोल ने कोविड-19 की तारीफ की थी! उन्होंने ने इस महामारी की तारीफ लोगों की दिनचर्या बदलने की लिए की है। साथ ही उन्होंने इसको पुरस्कार देने की पैरवी की है। उन्होंने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट की स्टोरी एक पोस्ट साझा किया था। इस पोस्ट में उन्होंने कोविड-19 को पुरस्कार देने की अपील की थी। उन्होंने कोरोना वायरस की महामारी को 'टीचर ऑफ द ईयर' बताया था।

वरुण धवन ने सारा से पहली मुलाकात को बताया इंट्रेस्टिंग

एक्टर वरुण धवन ने सारा अली खान से पहली मुलाकात को इंट्रेस्टिंग बताया है। उन्होंने कहा कि वरुण ने बताया कि वे पहले से दोस्त नहीं थे। हालांकि वरुण सारा से पहले नहीं मिले थे। वरुण ने बताया कि 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर' की शूटिंग के दौरान सारा उसी बिल्डिंग में थीं। वह लिफ्ट में घुसे ही थे कि सारा आ गईं। सारा ने फोन पर बात करना शुरू कर दिया। उस समय वरुण इस बात से हैरान थे कि लिफ्ट में उन्हें नेटवर्क कैसे मिल रहा है। वहीं, सारा ने खुलासा किया कि वह वरुण की जबरदस्त फैन थीं और अब भी हैं। सारा ने बताया कि जब उन्होंने वरुण को देखा तो जानबूझकर उसी लिफ्ट में जाने का प्लान किया था। दोनों ने बताया कि अब उनकी दोस्ती हो चुकी है। बता दें कि वरुण धवन और सारा अली खान फिल्म 'कुली नंबर 1' में एकसाथ नजर आने वाले हैं। यह फिल्म 25 दिसंबर को रिलीज होने वाली है। फिल्म के वर्चुअल ट्रेलर के दौरान उनसे पूछा गया कि क्या वह पहले से दोस्त थे या सेट पर ही मिले। इस पर दोनों ने मजेदार जवाब दिए।

सेट पर बर्फ से खेलती नजर आईं सुरभि चंदना

टीवी की मशहूर एक्ट्रेस सुरभि चंदना सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव नजर आ रही हैं। वह अकसर अपनी शूटिंग से जुड़ी वीडियो और फोटो शेयर करती रहती हैं। हाल ही में सुरभि चंदना का एक और वीडियो सोशल मीडिया पर फैंस का खूब ध्यान खींच रहा है। इस वीडियो में सुरभि चंदना रेड आउटफिट में सेट पर बर्फ से खेलती हुई दिखाई दे रही हैं। सुरभि चंदना ने यह वीडियो अपने इंस्टाग्राम रील पर शेयर किया है, जिसे अभी तक 1 लाख से भी ज्यादा बार लाइक किया जा चुका है। इसके साथ ही सुरभि चंदना के वीडियो को लेकर फैंस जमकर कमेंट भी कर रहे हैं। इस वीडियो को शेयर करते हुए टीवी की नागिन ने लिखा कि बर्फ में फंसी नागिन। बता दें कि यह पहली बार नहीं है जब सुरभि चंदना ने अपने वीडियो से इस कदर लोगों का ध्यान खींचा हो। इसके पहले भी सुरभि चंदना के वीडियो को लेकर फैंस उनकी तारीफें करते आ रहे हैं। वह कई बार सोशल मीडिया पर अपने डांस वीडियो भी शेयर कर चुकी हैं। सुरभि चंदना ने अपनी एक्टिंग से लोगों का दिल जीतने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। एक्ट्रेस ने टीवी में अपने करियर की शुरूआत कुबूल है से की थी। इसके बाद वह इशकबाज में मुख्य भूमिका निभाती हुई नजर आई थीं। इशकबाज में अपनी एक्टिंग से सुरभि चंदना ने लोगों का दिल जीत लिया था। अब एक्ट्रेस नागिन 5 के जरिए धमाल मचाती हुई दिखाई दे रही हैं।

बोट-नेक ब्लाउज पहने नजर आईं सोनाक्षी सिन्हा

बॉलीवुड अभिनेत्री सोनाक्षी सिन्हा ने सोशल मीडिया पर एक तस्वीर पोस्ट की है। इस तस्वीर में वह सफेद बोट-नेक ब्लाउज पहने नजर आ रही हैं। सोनाक्षी ने अपने इस लुक को बालों को खुले रखकर और कम मेकअप के साथ पूरा किया। उन्होंने कैप्शन में प्रशंसकों को छेड़ते हुए लिखा कि पीक-ए-बू .. मैं तुम्हें देखती हूं! हाल ही में, सोनाक्षी ने साझा किया कि वह अब एक प्रमाणित स्कूबा गोताखोर हैं। अभिनेत्री ने इंस्टाग्राम पर तस्वीरों की एक स्ट्रिंग पोस्ट की। बता दें कि सोनाक्षी फिल्म 'भुजः द प्राइड ऑफ इंडिया' में नजर आएंगी। ये फिल्म सच्ची घटना पर आधारित है। इस क्राइम एक्शन फिल्म में अजय देवगन, संजय दत्त, नोरा फतेही और शरद केलकर भी हैं।

आयुष्मान ने अपनी सोच के विपरीत जाकर किया काम

बॉलीवुड के जाने-माने अभिनेता आयुष्मान खुराना ने अपनी सफलता के बारे में जानकारी दी है। उन्होंने कहा कि मेरे ख्याल से धारा के विपरीत जाकर काम करने और जैसा हूं बिल्कुल वैसा बने रहने के मेरे फैसले की वजह से मेरी बात बनी है। मैं असल जिंदगी में जैसा हूं उस व्यक्तित्व के प्रति सच्चा बना रहा। उन्होंने आगे कहा कि मेरा मानना है कि देश अब सामाजिक मुद्दों को लेकर खुलकर बोलना चाहता है। मैं खुशकिस्मत हूं कि दर्शकों को मेरी फिल्मों का ब्रांड पसंद आया, वे इससे जुड़े रहे और अपनी भावनाओं को मेरी भावनाओं संग जोड़कर देखा। आज लोगों को मेरी ये जो काबिलियत देखने को मिल रही है, वह इस वजह से क्योंकि एक इंसान के तौर पर मैं अपनी सोच को लेकर निडर रहा हूं। अगर मैं एक ऐसा इंसान होता, जिसका इन चीजों पर यकीन ही नहीं होता, जिसके बारे में उसने अपनी फिल्म में आवाज उठाई है, तो लोग किसी भी कीमत पर इससे खुद को नहीं जोड़ पाते। बता दें कि आयुष्मान ने कई ऐसी फिल्में दी, जिससे समाज को काफी सीख मिली है। वर्कफ्रंट की बात करें तो आयुष्मान खुराना अभिषेक कपूर निर्देशित फिल्म 'चंडीगढ़ करे आशिकी' में वाणी कपूर के साथ नजर आएंगे। इसके अलावा राज शांडिल्य निर्देशित फिल्म 'गुगली' में भी नजर आएंगे।

रकुलप्रीत ने अपने फ्लाइबोर्डिंग अनुभव को किया शेयर

बॉलीवुड एक्ट्रेस रकुलप्रीत सिंह ने अपने फ्लाइबोर्डिंग का अनुभव शेयर किया है। हाल ही में रकुल ने अपनी मालदीव की छुट्टियों से इंस्टाग्राम पर एक तस्वीर शेयर की। इस तस्वीर में वह एक फ्लाईबोर्ड पर खड़ी दिखाई दे रही हैं। इस तस्वीर के साथ रकुल कैप्शन लिखा कि 7 बार गिरो, 8 बार उठो यहां मैं 70 बार फ्लाईबोर्ड से गिर गई। हैशटैग फ्लाईबोर्ड हैशटैग वॉटरफ्रीक। इस तस्वीर को फोटो शेयरिंग वेबसाइट पर 1.05 लाख से अधिक लाइक्स मिल चुके हैं। बता दें कि रकुल अमिताभ बच्चन और अजय देवगन के साथ थ्रिलर ड्रामा फिल्म 'मेडे' में नजर आएंगी। यह फिल्म अजय देवगन द्वारा निर्देशित और निर्मित है। इस फिल्म में अभिनेत्री को एक पायलट की भूमिका में देखा जाएगा। वह हैदराबाद में दिसंबर के मध्य में 'मेडे' की शूटिंग शुरू करेंगी।

अनिल कपूर को कोरोना होने की गलत खबर पर भड़कीं सोनम कपूर

हाल ही में बॉलीवुड एक्टर वरुण धवन और नीतू कपूर भी कोरोना वायरस से संक्रमित पाए गए हैं। इस बीच अनिल कपूर के इस महामारी से संक्रमित होने की खबर सामने आई थी। अनिल कपूर के कोरोना पॉजिटिव होने की खबर फैलते ही उनके फैन काफी परेशान हो गए। जिसके बाद खुद अनिल कपूर ने इन खबरों को गलत बताया था। अब उनकी बेटी और बॉलीवुड एक्ट्रेस सोनम कपूर ने उनकी गलत कोरोना रिपोर्ट वायरल होने पर प्रतिक्रिया दी है। सोनम कपूर ने अपने पिता की गलत कोरोना रिपोर्ट को लेकर एक ट्वीट किया है। जिससे पता चलता है कि वह अपने पिता की गलत कोरोना रिपोर्ट के वायरल होने से काफी नाराज हैं। पिता की गलत कोरोना रिपोर्ट देखकर सोनम कपूर काफी परेशान हो गई थीं। लेकिन, जैसे ही उन्हें सच का पता चला, उन्होंने ये खबर फैलाने वालों की जमकर क्लास लगा दी। सोनम कपूर ने इसे लेकर एक ट्वीट भी किया है। अपने ट्वीट में सोनम लिखती हैं- 'गलत रिपोर्टिंग खतरनाक है। मैं लंदन में बैठी हूं और मुझे अपने पिता से बात करने से पहले मीडिया के कुछ हिस्सों द्वारा अपने पिता के बारे में गलत रिपोर्ट देखने को मिली। कृपया अपनी रिपोर्टिंग में जिम्मेदार बनें।'

एचआरडी मंत्री निशंक ने महर्षि अरविन्द पर लिखी पुस्तक, राष्ट्रपति कोविंद ने किया विमोचन

नई दिल्ली ■ ब्यूरो

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री डॉ रमेश पोखरियाल निशंक द्वारा महर्षि अरविन्द पर लिखी पुस्तक मानवता के प्रणेता : महर्षि अरविन्द का शनिवार को राष्ट्रपति भवन में विमोचन किया। डॉ. निशंक ने पुस्तक की पहली प्रति राष्ट्रपति को भेंट की। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री ने कहा कि महर्षि अरविन्द भारतीय संस्कृति, मूल्यों और सनातन धर्म के लिए पूरी तरह से समर्पित थे। वह भारत की विलक्षण क्षमता पहचानते थे और प्रत्एक देशवासी को इससे अवगत करवाना चाहते थे। उन्होंने कहा, महर्षि अरविन्द की सामाजिक एवं राजनीतिक विषयों पर गहरी पकड़ और चेतना के विकास की उनकी असाधारण समझ का मैं सदैव कायल रहा हूँ। वह भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में 1905 से 1910 तक केवल पांच वर्ष रहे और इतनी अल्पावधि में देश के जनमानस को इतना समर्थ बना दिया कि वह अपनी वास्तविक हस्ती को पहचान सके और अपने अतीत की खोई गरिमा और महिमा को पुनः अर्जित कर सके।

पुस्तक में महर्षि अरविंद की जीवन यात्रा का उल्लेख

इस पुस्तक में महर्षि अरविंद की जीवन यात्रा, उनके चिन्तन, पूर्ण योग और जीवन संघर्ष को एक ही स्थान पर सरल भाषा में बताया गया है। पुस्तक में यह बताने का प्रयास किया है कि किस प्रकार भारत को आध्यात्मिक रूप से एक करने के लिए महर्षि अरविन्द ने वेद एवं उपनिषद का सहारा लिया और भारतीय ज्ञान परंपरा की पताका को विश्वभर में फैलाया ताकि भारतीय अपने ज्ञान के प्रति गौरवान्वित महसूस कर सकें। डॉ. निशंक ने कहा, मेरा मानना है कि नए भारत के निमार्ण की जिम्मेदारी हमारी युवाशक्ति पर है। मुझे लगता है श्री अरविन्द के योग की अभिन्न प्रकृति, ज्ञान के पथ का संश्लेषण, भक्ति पर, कर्म पर उनका अलग नजरिया उन्हें भगवान बुद्ध, महावीर, रामकृष्ण जैसी प्रबुद्ध आत्माओं की श्रेणी में खड़ा करता है।

न्यूज. ब्रीफ

कोलकाता हेलमेट नहीं पहनने पर नहीं मिलेगा पेट्रोल, 8 से लागू होगा नियम

कोलकाता। हेलमेट नहीं पहने होने के कारण दोपहिया वाहनों के हादसे में अधिकांश मौतें होती हैं। कोलकाता पुलिस ने हेलमेट नहीं पहनने वाले मोटरसाइकिल सवारों को पेट्रोल पंपों पर पेट्रोल नहीं देने के लिये, हेलमेट नही, पेट्रोल नही व्यवस्था को दोबारा लागू करने का निर्णय लिया है। एक अधिकारी ने इसकी जानकारी दी । अधिकारी ने बताया, हेलमेट नहीं, पेट्रोल नही का नियम आठ दिसंबर से लागू होगा और अगले 60 दिनों तक जारी रहेगा। कोलकाता पुलिस आयुक्त अनुज शर्मा ने शुक्रवार को जारी एक आदेश में कहा कि ऐसा पाया गया कि कई मौकों पर दोपहिया वाहन चला रहे या पीछे बैठे लोग हेलमेट नहीं पहनते हैं और कई स्तरों पर नियमों का उल्लंघन बढ़ा है। जुलाई 2016 में बाइकसवारों के हेलमेट नही पहनने को लेकर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी द्वारा नाराजगी जाहिर करने के बाद शहर की पुलिस ने इसी तरह का नियम हेलमेट नही, पेट्रोल नही लागू किया था।

450 किमी दूर रेस्त्रां का बर्गर खाने के लिए शख्स ने बुक किया 2 लाख में हेलिकॉप्टर

मास्को। अपने खाने के शौक को पूरा करने और बर्गर खाने के लिए एक शख्स ने हाल ही में 2 लाख रुपये खर्च किए हैं। इस सफर को पूरा करने के लिए रशियन अरबपति विक्टर मार्टिनोव ने 450 किलोमीटर की दूरी तय की है। दरअसल, 33 वर्षीय विक्टर मार्टिनोव और उनकी प्रेमिका क्रीमिया में छुट्टियां मना रहे थे, लेकिन वहां का आर्गेनिक खाना खाकर वह तंग आ चुके थे। इस दौरान बर्गर की तलाश में उन्होंने हेलीकॉप्टर बुक किया और निकटतम मैक्डोनाल्ड्स आउटलेट पर उड़ान भरी। यह क्रीमिया से लगभग 450 किलोमीटर दूर था। एक रूसी मीडिया के अनुसार, विक्टर ने इस हेलीकॉप्टर ड्राइव के लिए 2,000 पाउंड तकरीबन, 2 लाख रुपये का भुगतान किया। रूसी मीडिया से बात करते हुए उन्होंने कहा कि मैं और मेरी प्रेमिका, वहां का आर्गेनिक फूड खाकर तंग आ चुके थे, हम नार्मल मॉस्को खाना चाहते थे। इसलिए, हमने एक हेलीकॉप्टर लिया और कि क्रासनोडोर के लिए उड़ान भरी। वास्तव में, यह काफी रोमांच से भरा रहा। हमने हैमबर्गर खाया और फिर वापिस हेलीकॉप्टर में उड़ान भरी। बता दें, मार्टिनोव एक मॉस्को कंपनी के सीईओ हैं, जो हेलीकॉप्टर बेचती है। 2014 में ही क्रीमिया में फास्ट फूड का संचालन बन्द हो गया था और इसीलिए वहां अब एक भी मैक्डोनाल्ड्स आउटलेट नही है।

दुल्हन के कोरोना पॉजिटिव होने पर आखिरी समय पर बदला शादी का कार्यक्रम, खिड़की से पूरी की सभी रस्में

कैलिफोर्निया । कोरोना वायरस ने सभी जिंदगी को मुश्किल बना दिया है, लेकिन इंसान ऐसी चीज है जो हर मुश्किल का हल निकाल ही लेता है। आप देख रहे होंगे कि आपके आस-पास कोरोना काल में खूब शादियां हो रही हैं लेकिन क्या हो अगर मैं आपसे कहूं एक ऐसी शादी भी हुई जब शादी से कुछ समय पहले ही पता चला कि दुल्हन कोरोना पॉजीटिव है। जी हां, ऐसा हुआ भी और इसके बावजूद भी उसकी शादी हो गई। दक्षिणी कैलिफोर्निया के एक जोड़े को अपनी शादी के कुछ समय पहले ही अपनी शादी में कुछ बदलाव करने पड़े, जब सबको पता चला कि दुल्हन ने कोरोनो पॉजीटिव है। उन्होंने फैसला लिया कि वो कोरोना वायरस को उनकी शादी के रास्तें में नहीं आने देंगे। दोनों ने अलग-अलग मंजिलों पर खड़े होकर शादी की रस्मों को पूरा किया। दुल्हन दूसरी मंजिल पर थी और दूल्हा ग्राउंड फ्लोर पर जब दोनों ने श्आई डूश् कहा, शादी में सभी मेहमान आपस में छह फीट की दूरी बनाए खड़े थे और कुछ रिश्तेदारों ने तो अपनी गाड़ी में से ही इस अद्भुत शादी का आनंद लिया। कोरोना काल में हुई शादी अपन आप साल 2020 की तरह काफी अलग रही।

|डब्लूएचओ ने कहा- अगले साल की शुरूआत में ही सबको नहीं मिलेगा टीका|

वैक्सीन नहीं है कोई जादू की गोली

जिनेवा ■ एजेंसी

एक तरफ दुनिया कोरोना वैक्सीन आने की खबरों से उत्साहित है तो विश्व स्वास्थ्य संगठन ने चेतावनी दी है कि कोरोनावायरस संकट के लिए वैक्सीन कोई जादू की गोली नहीं है। संक्रमण से निपटने के लिए राष्ट्र बड़े पैमाने पर रोलआउट करते नजर आ रहे हैं।

डब्लूएचओ के शीर्ष स्वास्थ्य निदेशक माइकल रयान ने कहा, टीके के आने का मतलब कोविड का पूरी तरह खत्म हो जाना नहीं है। इसे अगले साल की शुरूआत में हर कोई प्राप्त नहीं कर पाएगा।र उन्होंने आगे कहा कि बेशक वैक्सीन के आ जाने से हमारी मेडिकल किट में एक प्रमुख शक्तिशाली उपकरण जुड़ गया है। लेकिन, वह अकेले ही सारा काम नहीं कर पाएगी। डब्लूएचओ के महानिदेशक डॉक्टर टेड्रोस अदनोम घेब्रेयेसस ने वैक्सीन को एक गहरी सुरंग से निकलती रोशनी की तरह बताया है। उन्होंने कहा कि लोगों में यह धारणा

बढ़ रही है कि कोरोना वायरस खत्म हो गया है, लेकिन ऐसा नहीं है, यह अभी भी बहुत तेजी से फैल रहा है। टेड्रोस ने बैठक में यह भी कहा कि हमें तैयारियों के लिए, वैश्विक प्रणाली पर ध्यान देने की आवश्यकता है। सितंबर में स्थापित डब्लूएचओ आयोग, अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य नियमों की समीक्षा कर रहा है। डब्लूएचओ कई देशों के साथ मिलकर एक पायलेट प्रोग्राम शुरू करने पर काम कर रहा है, जिसमें सभी देश अपनी स्वास्थ्य तैयारियों की नियमित और पारदर्शी समीक्षा करने के लिए सहमत हुए हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि वर्तमान में 51 उम्मीदवारों की वैक्सीन इंसानों पर टेस्ट की जा रही है, जिसमें से 13 अभी फाइनल स्टेज पर पहुंच रहे हैं। बुधवार को ब्रिटेन पहला ऐसा देश बना है जिसने अपनी वैक्सीन फाइजर-बायोटेक्निक को आम लोगों पर उपयोग करने की अनुमति दी है। अमेरिका भी इस महीने इसे हरी झंडी दे देगा। वैक्सीन के आने के साथ, अमेरिकी कंपनियां इसके वितरण में सहायता के लिए बड़े पैमाने पर प्रयास कर रही है। फाइजर और बायोटेक्निक ने कहा है कि उनकी वैक्सीन को माइनस 94 डिग्री का तापमान चाहिए होगा, अब इसके बाद अलग-अलग फर्म इंसुलेटिंग कंटेनर के युद्धस्तर पर इंतजाम करने में लगी हुई हैं।

अमेरिका नहीं, बल्कि बहरीन ने फाइजर की कोरोना वैक्सीन के इस्तेमाल को दी मंजूरी

ब्रिटेन के बाद बहरीन दुनिया का दूसरा देश बन गया है जिसने दवा निमार्ता कंपनी फाइजर और उसके जर्मन सहयोगी बायोनटेक द्वारा विकसित कोविड-19 टीके के आपात इस्तेमाल की औपचारिक मंजूरी दी है। बहरीन की सरकारी संवाद एजेंसी ने शुक्रवार रात को इसकी घोषणा की। एजेंसी ने बताया, उपलब्ध आंकड़ों के गहन विश्लेषण और समीक्षा के बाद बहरीन के स्वास्थ्य नियामक एजेंसी ने इसके आपात इस्तेमाल की मंजूरी दी है। हालांकि, बहरीन ने यह नहीं बताया कि उसने टीके की कितनी खुराक खरीदी है और टीकाकरण कब शुरू होगा। एसोसिएटेड प्रेस के सवाल का भी बहरीन की प्राधिकारियों ने तत्काल कोई जवाब नहीं दिया। बाद में फाइजर ने बताया कि बहरीन को टीके की आपूर्ति और खुराकों की संख्या सहित बिक्री का समझौता गुप्त है और विस्तृत टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। गौरतलब है कि बहरीन पहले ही चीन निर्मित टीके साइनोफार्म के आपात इस्तेमाल की मंजूरी दे चुका है और अबतक 6,000 लोगों के ये टीके लगाए हैं।

बाइडेन सार्वजनिक रूप से कोरोना वैक्सीन लेने के लिए तैयार

अमेरिका के नागरिकों को कोरोना वैक्सीन लेने के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा। नवनिर्वाचित राष्ट्रपति जो बाइडेन ने शुक्रवार को कहा कि अमेरिकियों को कोरोनावायरस वैक्सीन लेने के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा और इसके प्रभाव और सुरक्षा के बारे में चिंतित लोगों के लिए वह सार्वजनिक रूप से टीकाकरण कराने के लिए तैयार हैं। जो बाइडेन ने वैक्सीन के बारे में बात करते हुए कहा कि मुझे नहीं लगता कि यह अनिवार्य होनी चाहिए। मैं नहीं चाहता कि यह अनिवार्य हो, ठीक वैसे ही जैसे मुझे नहीं लगता मास्क अनिवार्य हो। जो बाइडेन जनवरी में राष्ट्रपति पद की शपथ लेंगे। उन्होंने कहा कि वह यह सुनिश्चित करेंगे कि कोरोना वैक्सीन सभी के लिए निशुल्क उपलब्ध हो। उन्होंने आगे कहा, टटमैं संयुक्त राष्ट्र के राष्ट्रपति के रूप में वह सबकुछ करूंगा, जिससे लोगों को सही काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। इसीलिए मैंने अपने भाषण में कहा था कि मैं लोगों से 100 दिनों के लिए मास्क पहनने की अपील करने जा रहा हू, यह कोई राजनीतिक मुद्दा नहीं है जिसपर दंड जैसा प्रावधान किया जाए।

किम जोंग उन का क्रूर फैसला, उत्तर कोरिया में कोरोना नियम तोड़ने पर आरोपी को सरेआम गोलियों से भुनवा दिया

उत्तर कोरिया के तानाशाही शासक किम जोंग उन अपनी क्रूर हरकतों के लिए मशहूर हैं। एकबार फिर उनकी क्रूरता की कहानी सामने आ रही है। कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण के कारण पूरे उत्तर कोरिया में ना सिर्फ कड़ा प्रतिबंध लगा हुआ है, बल्कि नियमों को तोड़ने वालों को कड़ी सजा भी दी जा रही है। यह सजा मौत की भी हो सकती है। हालांकि, किम जोंग उन के लिए लोगों को मौत की सजा देने काफी आम बात है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, हाल ही में उत्तर कोरिया में एक व्यक्ति को अपनी जान से इसलिए हाथ धोनी पड़ गई, क्योंकि उसने कोरोना को लेकर देश में लगाए गए प्रतिबंधों का उल्लंघन किया था। किम जोंग उन को यह उल्लंघन नागवार गुजरी और उसने मौत की सजा का तुगलकी फरमान जारी कर दिया। किम जोंग उन ने उत्तर कोरिया में एक व्यक्ति की फायरिंग स्कॉड के हाथों जान ले ली। उसने सार्वजनिक रूप से उसे गोलियों से भुनवा दिया। मीडिया रिपोर्ट्स तो यह भी बता रहे हैं कि किम जोंग उन ने अपने नागरिकों को डराने के लिए चीन सी सटी सीमा पर एंटी एयरक्राफ्ट बंदूकों को भी तैनात कर रखा है। इन हथियारों से सीमा से लगभग एक किमी दूर किसी भी व्यक्ति को गोली मारी जा सकती है, जिसके आदेश किम जोंग उन ने दे रखे हैं। अंतरराष्ट्रीय अंग्रेजी अखबरा डेली मेल के मुताबिक, किम जोंग उन ने 28 नवंबर को अपनी सेना को एक व्यक्ति को कोरोना के प्रतिबंधों का उल्लंघन करने के लिए सार्वजनिक रूप से गोली मारने का आदेश दिया। आरोप है कि उस व्यक्ति ने प्रतिबंधों को तोड़ते हुए उत्तर कोरिया में चीनी सामानों की तस्करी की। ऐसा करते हुए उसे स्थानीय सुरक्षा बलों ने पकड़ लिया। इसके बाद उसे सरेआम गोलियों से भून दिया गया।

चीन ने चांद पर फहराया झंडा, ऐसा करने वाला दुनिया का दूसरा देश बना

नई दिल्ली ■ ब्यूरो

अमेरिका के बाद चीन चंद्रमा पर अपना झंडा फहराने वाला दुनिया का दूसरा देश बन गया है। अमेरिका ने लगभग 50 साल पहले ही चंद्रमा पर अपना झंडा फहरा चुका था। चाइना नेशनल स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन ने चंद्रमा पर फहराए गए अपने झंडे का फोटो शेयर किया है, जो कि चांग-5 स्पेसक्रॉफ्ट से लिया गया है। चीनी मीडिया ने कहा है कि देश के एयरोस्पेस इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है। जब चंद्रमा पर पांच सितारा वाले लाल राष्ट्रीय ध्वज को चंद्रमा पर फहराया है। चांग-5 चंद्रमा पर सफलतापूर्व उतरने वाला तीसरा चीनी अंतरिक्ष यान है और वहां से टेक ऑफ करने वाला पहला। यह बीजिंग के महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष कार्यकर्म के लिए बड़ी उपलब्धि है। चीन के इस अंतरिक्ष यान द्वारा चंद्रमा से जुड़ी बहुत सी जानकारी सामने आ सकती है। खासकर उसकी मिट्डी और चट्टान के नमूनों से चंद्रमा की उत्पत्ति, भूगर्भीय विकास और ज्वालामुखी से जुड़ी जानकारी सामने आ सकती है। स्पेस प्रोब का 16 दिसंबर को इनर मंगोलिया में उतरने में उम्मीद है। वहां से, नमूनों को विश्लेषण के लिए विशेष प्रयोगशालाओं में पहुंचाया जाएगा। बता दें कि चांद पर

सीएम अशोक गहलोत का बड़ा आरोप राजस्थान में सरकार गिराने के लिए कांग्रेस विधायकों से मिले अमित शाह

जयपुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने देश के गृहमंत्री और बीजेपी के पूर्व अध्यक्ष अमित शाह पर उनकी सरकार को गिराने की कोशिश का आरोप लगाया है। अशोक गहलोत ने शनिवार को कहा कि अमित शाह और पेट्रोलियम मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कांग्रेस विधायकों से मुलाकात की और दावा किया है कि वह पांच सरकारें गिरा चुके हैं और राजस्थान सरकार को भी गिरा देंगे। अशोक गहलोत ने कहा, उन्होंने राजस्थान में सरकार गिराने की कोशिश की है। अमित शाह और धर्मेंद्र प्रधान से मुलाकात के बाद हमारे विधायकों ने मुझे कहा कि वह अमित शाह को गृहमंत्री देखककर शर्मिंदा हैं। एक समय था जब गृहमंत्री सरदार पटले थे और अब वह हैं। गहलोत ने आगे कहा, वे (इखढ) भरोसा दे रहे थे कि पांच सरकारों को गिरा चुके हैं और अब छठी सरकार होगी। बीजेपी इस तरह की साजिश करती रही है। गौरतलब है कि कुछ महीने पहले ही अशोक गहलोत की सरकार गिरते-गिरते बची थी, जब उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट अपने खेमे के विधायकों के साथ बागी हो गए। हालांकि, बहुमत परीक्षण से पहले कांग्रेस नेतृत्व ने किसी तरह पायलट को मना लिया।

सीतापुर में नाबालिग का अपहरण कर धर्म परिवर्तन की कोशिश, आठ के खिलाफ एफआईआर, दो गिरफ्तार

सीतापुर ■ एजेंसी

उत्तर प्रदेश के सीतापुर में नाबालिग लड़की का अपहरण कर धर्म परिवर्तन कराने के मामले में पुलिस ने आठ आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली है। इस मामले में पुलिस ने आरोपी के भाई और बहनोई को गिरफ्तार कर लिया है। नाबालिग के परिवारीजनों ने एक हफ्ते पहले उसके अपहरण का आरोप लगाया है। इस मामले में कुछ आरोपी अभी भी फरार हैं। पुलिस ने दावा किया है कि उन्हें भी जल्द ही पकड़ लिया जाएगा। यह मामला सीतापुर के तंबौर थाना क्षेत्र का है। आरोप है कि इस इलाके के एक गांव की नाबालिग लड़की का एक हफ्ते पहले कुछ लोगों ने अपहरण कर लिया। पीड़िता की मां के अनुसार उसके घर से रुपए भी गायब थे। मामले में पीड़िता की मां ने पहले अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज कराया था लेकिन बाद में पिता ने गांव के जुबराईल उसके भाई इजराइल, बहनोई उस्मान और उनके अन्य सहयोगियों के खिलाफ प्रार्थना पत्र दिया। उन्होंने आईजीआरएस पर भी इसकी शिकायत दर्ज कराई। पिता ने आरोप लगाया कि जुबराईल और उसके परिवारवालों ने उनकी नाबालिग बेटी का अपहरण कर लिया। अब उसे जबरन धर्म परिवर्तन के लिए ले जाया जा रहा है।

जांच के बाद एफआईआर में बढ़ीं धाराएं

इस मामले की जांच के बाद पुलिस ने एफआईआर में साक्ष्यों के आधार पर धर्म परिवर्तन संशोधित अध्यादेश के तहत धाराएं बढ़ाई। शुक्रवार को पुलिस पीड़िता के गांव पहुंची थी। मामले में मुख्य आरोपी के भाई और बहनोई को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

रूस के मॉस्को में कोरोना के टीके लगना शुरू, खोले गए 70 वैक्सीन सेंटर

एक दिन में आए रिकॉर्ड 28782 मरीज

मास्को। रूस की राजधानी मॉस्को में शनिवार को कोविड-19 के टीकाकरण कार्यक्रम की शुरुआत हो गई। यह टीका उन लोगों को सबसे पहले दिया जा रहा है, जिनको संक्रमित होने का खतरा सबसे अधिक है। रूस अपने स्पूतनिक वी नामक टीके का उपयोग कर रहा है। स्पूतनिक वी विकसित करने वाले वैज्ञानिकों का मानना है कि यह 95 प्रतिशत प्रभावी है और इसका कोई बड़ा दुष्प्रभाव नहीं है। हालांकि, सकारात्मक परिणाम के बावजूद टीके का सामूहिक परीक्षण अभी भी जारी है। हजारों लोगों ने टीकाकरण के लिए पंजीकरण किया है। बीबीएस की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि इस वर्ष के अंत तक टीके की केवल 20 लाख खुराक बनने की उम्मीद है। मास्को के मेयर सर्गेई सोबयानिन ने कहा कि यह सबसे पहले स्कूलों के कर्मचारियों, स्वास्थ्यकर्मी और सामाजिक कार्यकताओं को उपलब्ध कराया जा रहा है। सभी मरीजों का 21 दिनों के गैप में दोनों इंजेक्शन दिए जाएंगे।

दर्जनों टीकाकरण केंद्र खोले गए टीका लगना शुरू होने के साथ ही मॉस्को में शनिवार को 70 टीकाकारण केंद्र खोले गए। डॉक्टरों, शिक्षकों और स्थानीय निकाय के कर्मचारियों को इसके लिए अपना समय निर्धारित करने के लिए कहा गया है। महापौर सोबयानीन ने बताया कि कुछ ही घंटों में पांच हजार से अधिक लोगों ने पंजीकरण किया है। रूस ने दावा किया कि स्पुतनिक वी दुनिया का पहला पंजीकृत कोरोना टीका है, क्योंकि सरकार ने अगस्त की शुरुआत में इसे मंजूरी दे दी थी। हालांकि रूस कई अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों की रूस के इस कदम की आलोचना करते हुए कहा था कि टीके का परीक्षण उस समय केवल कई दर्जन लोगों पर किया गया था। इस पर राष्ट्रपति पुतिन ने कहा था कि उनकी बेटियों में से एक ने शुरुआती टीका लगवाया था।

रूस में कोरोना संक्रमण के रिकॉर्ड 28,782 नए मामले-दूसरी ओर, रूस में पिछले 24 घंटों के दौरान कोरोना वायरस (कोविड-19) संक्रमण के रिकॉर्ड 28,782 नए मामले सामने आने के साथ ही कुल संक्रमितों की संख्या बढ़कर 24,31,731 हो गई है। इससे पहले तीन दिसंबर को कोरोना के सर्वाधिक 28,145 नए मामले सामने आए थे। इस दौरान कोविड-19 के 508 मरीजों की मौत होने से इस महामारी से मरने वाले लोगों की संख्या बढ़कर 42,684 हो गई। रूस के कोरोना वायरस प्रतिक्रिया केन्द्र ने शनिवार को एक वक्तव्य जारी कर यह जानकारी दी। वक्तव्य के मुताबिक रूस के 85 क्षेत्रों में पिछले 24 घंटों में कोरोना के 28,782 नए मामले दर्ज किए गए जिनमें से 5,867 लोगों में कोरोना वायरस का कोई भी लक्षण सामने नहीं आया है।

चिंता — आने वाले दिनों बद्तर हो सकता है एक्यूआई

प्रदूषण: दिल्ली में हवा की हालत हुई खराब

नई दिल्ली ■ ब्यूरो

दिल्ली के लोग अब भी जहरीली हवा में सांस ले रहे हैं, राजधानी की हवा सुधरने का नाम ही नहीं ले रही है। शुक्रवार को यहां हवा की गति और पैटर्न में हुए बदलाव के कारण दिल्ली की हवा की गुणवत्ता बहुत खराब श्रेणी में पहुंच गई है। हवा धीमी होने के कारण प्रदूषकों का फैलाव धीमा हो गया। 35 निगरानी स्टेशनों में से कम से कम 17 स्टेशन लाल कैटेगरी में पहुंच गए।

सरकारी एजेंसियों ने पूवार्नुमान लगाया है कि ऐसी संभावना है कि अगले दो दिनों में वायु गुणवत्ता सूचकांक अधिक बिगड़ सकता है और शनिवार तक गंभीर श्रेणी तक जा सकता है, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के शाम 4 बजे के बुलेटिन के अनुसार, एक्यूआई 382 था, जो गुरुवार को 341 से अधिक था। बुधवार को यह 373 था। अधिकांश निगरानी स्टेशन जो गंभीर श्रेणी के हैं, उनमें आनंद विहार, आईटीओ,

विवेक विहार, अशोक विहार, बवाना, नरेला और मुंडका जैसे हॉट स्पॉट शामिल हैं।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार, वर्तमान में जलने वाली फसल की घटनाएं लगभग खत्म हो गई हैं. लेकिन इससे निकले प्रदूषक वातावरण में जमा हुए हैं और स्थानीय प्रदूषक प्रतिकूल मौसम की वजह से फैलने में सक्षम नहीं हैं। आईएमडी के क्षेत्रीय मौसम पूवार्नुमान केंद्र के प्रमुख कुलदीप श्रीवास्तव ने कहा कि दिन के दौरान हवा की गति लगभग 6-7 किमी प्रति घंटे थी, जो फैलाव के लिए अनुकूल नहीं है। इसके अलावा, हवा की दिशा उत्तर से तेजी से बदल गई।

7 दिसंबर के बाद ही कोई सुधार होने की संभावना

श्रीवास्तव ने कहा, जब भी हवा की दिशा में बदलाव होता है, तो यह हवा की गुणवत्ता को प्रभावित करता है क्योंकि हवाएं थोड़ी देर के लिए शांत हो जाती हैं और फैलाव की अनुमति नहीं देती हैं। रात का तापमान भी सामान्य से नीचे है, जो फिर से फैलाव के लिए अनुकूल नहीं है। पूर्व की हवाओं के कारण नमी बढ़ गई थी, जो प्रदूषक तत्वों को जमीन के करीब ले जाती है। उन्होंने कहा कि हवा की गुणवत्ता सप्ताहांत में गंभीर हो सकती है और 7 दिसंबर के बाद ही कोई सुधार होने की संभावना है जब उत्तर की ओर चलने वाली हवाओं की वापसी होगी।

फुटबॉल

चैंपियन्स लीग फुटबाल के ग्रुप जी मुकाबले में बार्सिलोना के सर्जियो डेस्ट (मध्य) डायनमो कीव्ज के गेर्सन रोड्रिग्स (बाएं) और विटाली बायलस्की के साथ संघर्ष करते हुए। यह मुकाबला एफसी बार्सिलोना और डायनमो कीव के बीच स्पेन के बार्सिलोना के कैंप नोऊ स्टेडियम में खेला गया।

कूरियर कंपनी और कस्टम में गलतफहमी हुई प्लेयर्स को उनका पैसा लौटाया जाएगा: रिजिजू

नई दिल्ली ■ ब्यूरो

केंद्रीय खेल मंत्री किरण रिजिजू ने कहा है कि वे इंडियन चेस टीम मेंबर्स के गोल्ड मेडल के लिए कस्टम ड्यूटी भुगतान करने वाली खबर सुनकर बेहद दुखी हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हुए कहा, 'हम एथलीट्स तक पहुंच गए हैं। कस्टम और कूरियर कंपनी के बीच गलतफहमी की वजह से ये स्थिति उत्पन्न हुई। कूरियर कंपनी खिलाड़ियों को उनका पैसा लौटाएगी।' रिजिजू ने कहा, 'ये काफी दुखद है। मामले को सुलझा लिया गया है। कूरियर कंपनी ने अपनी गलती को स्वीकार लिया है और वे श्रीनाथ नारायण और बाकी खिलाड़ियों को उनका पैसा लौटा

देंगे। दरअसल, इंडियन चेस टीम को FIDE ऑनलाइन ओलंपियाड में जीते गए गोल्ड मेडल के लिए कूरियर कंपनी को कस्टम ड्यूटी का भुगतान करना पड़ा था। भारत और रूस FIDE ऑनलाइन ओलंपियाड के जॉइंट विनर्स घोषित किए गए थे। आमतौर पर, अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में मेडल जीतने के बाद विदेश से लौटने वाले भारतीय खिलाड़ियों के लिए कस्टम ड्यूटी में छूट दी जाती है।

कस्टम ड्यूटी पे करने के बाद 12 गोल्ड मेडल्स मिले

वहीं, टीम के नॉन प्लेइंग कैप्टन ग्रैंडमास्टर श्रीनाथ नारायण ने एजेंसी से कहा था कि उन्होंने 12 मेडल के लिए DHL को 6,300 रुपए कस्टम ड्यूटी के रूप में भुगतान किया था। इसके बाद जाकर उन्हें मेडल मिला था। नारायण ने कहा कि उन्होंने DHL और कस्टम डिपार्टमेंट (बेंगलुरू) को इस संबंध में एक पत्र भी लिखा और बताया कि ये मेडल्स उन्हें किस संबंध में मिले थे।

कस्टम ड्यूटी में छूट की कोई मांग नहीं की गई

इसके बाद चेन्नई के कस्टम्स के चेयरमैन ने कहा था कि न तो DHL एक्सप्रेस इंडिया लिमिटेड और न ही FIDE ऑनलाइन ओलंपियाड में गोल्ड मेडल जीतने वाले इंडियन चेस टीम के नॉन प्लेइंग कैप्टन ने रूस से आए मेडल्स के लिए कस्टम ड्यूटी में छूट की मांग की। उन्होंने कहा कि DHL ने 28 नवंबर को ग्रैंडमास्टर श्रीनारायण की ओर से 12 मेडल्स के लिए चेन्नई कस्टम्स में एंट्री बिल भरा था।

एंट्री बिल भरते वक्त कोई दावा नहीं किया

उन्होंने कहा, 'एंट्री बिल भरते वक्त DHL ने नोटिफिकेशन बेनीफिट के लिए भी दावा नहीं किया था और न ही उन्होंने कस्टम्स के असिस्टेंट कमिश्नर से छूट की मांग की। इसके बाद एंट्री बिल को 30 नवंबर को कस्टम्स के असेसिंग ऑफिसर के सामने पेश किया गया। एंट्री बिल की जांच पड़ताल के बाद मेडल्स को क्लियरेंस दे दिया गया था।

न्यूज. ब्रीफ

वेस्टइंडीज के खिलाफ न्यूजीलैंड की जीत पक्की, तीसरे दिन इंडीज के 6 विकेट गिरे

हैमिल्टन। वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले टेस्ट मैच में न्यूजीलैंड की जीत पक्की दिख रही है। तीसरे दिन दूसरी पारी में वेस्टइंडीज के 196 रनों पर 6 विकेट गिरे हैं। जबकि पारी की हार से बचने के लिए वेस्टइंडीज को अब भी 185 रनों की जरूरत है। हालांकि सातवें विकेट के लिए जर्मेन ब्लैकवुड और अलजारी जोसेफ ने नाबाद शतकीय साझेदारी कर ली है। न्यूजीलैंड पारी से जीत की ओर बढ़ रही थी जब कप्तान केन विलियमसन ने 381 रन की बढ़त लेने के बाद मेहमान टीम को फॉलोआन खेलने भेजा। न्यूजीलैंड के पहली पारी के सात विकेट पर 519 रन (घोषित) के जवाब में वेस्टइंडीज टीम 138 रन पर आउट हो गई थी। वेस्टइंडीज ने दूसरी पारी के छह विकेट भी 86 रन पर गंवाने के बाद लग रहा था कि वह एक ही दिन में दो बार आउट होने वाली टेस्ट इतिहास में पांचवीं टीम बन जायेगी। विकेटकीपर शेन डोरिच ऊंगली में फ्रेक्चर के कारण बल्लेबाजी के लिए नहीं उतर सकते थे यानी वेस्टइंडीज के पास नौ ही विकेट हैं। इसके बाद ब्लैकवुड और जोसेफ ने 107 रन की नाबाद साझेदारी की। न्यूजीलैंड अभी भी 185 रन से आगे है, लेकिन इस जोड़ी ने उसका जीत का इंतजार लंबा कर दिया और वेस्टइंडीज को और शर्मिंदगी से बचाया।

न्यूजीलैंड के कोरी एंडरसन अब खेलेंगे अमेरिका की टीम से

टेक्सास। न्यूजीलैंड टीम के ऑलराउंडर कोरी एंडरसन ने राष्ट्रीय टीम को छोड़ने का फैसला किया है। उन्होंने अमेरिका की टी20 टीम से खेलने का निर्णय किया है। उन्होंने न्यूजीलैंड के लिए 13 टेस्ट, 49 वनडे और 31 टी20 मुकाबले खेले हैं। वनडे क्रिकेट में सबसे तेज शतक लगाने वाले एंडरसन अमेरिका में क्रिकेट की शुरूआत घरेलू मेजर लीग टी20 से करेंगे। यह टूर्नामेंट 2022 में होगा। अमेरिका की कोशिश वनडे क्रिकेट का दर्जा हासिल करने की है। इस कारण वह बड़े खिलाड़ियों को शामिल करने की पूरी कोशिश कर रहा है। एंडरसन की मंगेतर मैरी शामबर्गर अमेरिका मूल की है। लॉकडाउन के समय भी एंडरसन अमेरिका में ही थे। बताया जा रहा है कि अमेरिका क्रिकेट को बढ़ावा देने के लिए कुछ और बड़े क्रिकेट खिलाड़ियों को अपने साथ जोड़ के प्रयास कर रहा है। खबर है कि बॉलीवुड के स्टार शाहरुख खान ने अमेरिका की इस मेजर लीग टी20 की लॉस एंजिलिस टीम को खरीद लिया है।

शिखर धवन के जन्मदिन पर सहवाग ने साझा की गब्बर के हमशक्ल की तस्वीर

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम के हरफनमौला सलामी बल्लेबाज शिखर धवन के जन्मदिन पर विश्व क्रिकेट के दिग्गज खिलाड़ियो ने अपनी शुभकामनाएं दी है। इसी क्रम में वीरेंद्र सहवाग ने भी एक मजेदार ट्विट किया है जिसमें शिखर धवन का हमशक्ल दिख रहा है। सहवाग ने इसके साथ मजेदार कैप्शन दिया है। उन्होंने लिखा है- जन्मदिन की बहुत बहुत शुभकामनाएं उस व्यक्ति की जो सारा दिन मुस्कराता रहता है, जिसकी मैं उसकी प्रशंसा करता हूं। शिखर धवन। ससुराल में खूब खूब रन बनाओ। बाकी बचे मैच भी और है खुशी मनाओ। आपके पास सेलिब्रेशन मनाने के कई मौके आए। इतने कि आपकी जांघें लाल हो जाएं।

न्यूजीलैंड सरकार के रुख से नाराज पीसीबी, टीम को वापस बुलाने की तैयारी

लाहौर। पाकिस्तानी टीम का न्यूजीलैंड दौरा रद्द हो सकता है। पाकिस्तानी मीडिया के मुताबिक पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) अपनी टीम को न्यूजीलैंड से वापस बुला सकती है। दरअसल पाकिस्तान की टीम 11 दिनों क्वारंटीन में है, लेकिन अभी तक उन्हें प्रैक्टिस करने का मौका नहीं मिला है। उन्हें नेट प्रैक्टिस के लिए बाहर निकलना था लेकिन न्यूजीलैंड सरकार की हेल्थ डिपार्टमेंट ने उन्हें इसकी इजाजत नहीं दी। अब न्यूजीलैंड के रवैये से पाकिस्तानी बोर्ड बेहद नाराज है। स्थानीय मीडिया के मुताबिक शुक्रवार को पीसीबी ने एक इमरजेंसी मीटिंग बुलाई थी। मीटिंग में टीम को न्यूजीलैंड से वापस बुलाने पर विचार किया गया। सूत्रों के हवाले से दावा किया गया है कि पीसीबी के चेयरमैन एहसान मनी ने हेड कोच मिस्बाह उल हक और कप्तान बाबर आजम से पूछा है क्या इस दौरे को जारी रखा जाए फिर वापस आना चाहते हैं। कहा जा रहा है कि मिस्बाह टीम के बाकी खिलाड़ियों से उनकी राय जानने के बाद पीसीबी को बताएंगे। इसके बाद ही दौरे को जारी रखने पर विचार किया जाएगा।

| कंगारुओं पर फतह करने की तैयारी |

आज दूसरे टी-20 मैच के लिए भारतीय टीम का मनोबल हाई

सिडनी ■ एजेंसी

पहले मैच में शानदार जीत के बाद हरफनमौला रविंद्र जडेजा की गैर मौजूदगी में आज ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दूसरे टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में भारत का पलड़ा भारी रहेगा। भारतीय कप्तान विराट कोहली की टीम की नजरें श्रृंखला अपने नाम करने पर लगी होंगी। टेस्ट श्रृंखला से पहले टी20 श्रृंखला जीतने से भारतीय टीम का मनोबल बढ़ेगा। कैनबरा में तीसरा वनडे और पहला टी-20 जीतने के बाद भारतीय टीम सिडनी ग्राउंड पर लौटी है, जहां उस ऑस्ट्रेलिया ने पहले दो वनडे में हराकर श्रृंखला जीती थी।

पहले टी-20 में चोट लगने के बाद ह्यकनकशनह्न विकल्प के तौर पर आए युजवेंद्र चहल ने शानदार गेंदबाजी करते हुए तीन विकेट लिए। भारत को निचले क्रम पर जडेजा की आक्रामक बल्लेबाजी की कमी खलेगी लेकिन इस प्रदर्शन के बाद टीम का आत्मविश्वास बुलंद है। जडेजा ने 23 गेंद में नाबाद 44 रन बनाकर भारत को अच्छे स्कोर तक पहुंचाया। कोहली हालांकि उम्मीद

कर रहे हैं कि शीर्ष पांच बल्लेबाज ही इतना अच्छा प्रदर्शन करें कि निचले क्रम तक पहुंचने की जरूरत ही नहीं पड़े। ऑस्ट्रेलिया के स्टार बल्लेबाज डेविड वॉर्नर फिट नहीं है और भारतीय खेमा दुआ करेगा कि फॉर्म में चल रहे विरोधी कप्तान आरोन फिंच भी पूरी तरह से फिट नहीं हों। डार्सी शॉर्ट पहले टी-20 मैच में सहज नहीं दिखे और चहल ने उनकी कमजोरियां भांपकर आफ स्टम्प से बाहर गेंदबाजी की। स्टीव स्मिथ टेस्ट और वनडे के महान बल्लेबाज हैं लेकिन टी-20 में प्रदर्शन को दोहरा नहीं पाते है। ग्लेन मैक्सवेल की भी कमजोरियां है, जो आखिरी वनडे और पहले टी-20 में जसप्रीत बुमराह और टी नटराजन ने उजागर की।

भारत को शीर्षक्रम से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद होगी खासकर सलामी बल्लेबाज शिखर धवन से जो पहले वनडे के बाद से चल नहीं सके हैं। कप्तान कोहली असाधारण प्रदर्शन नहीं कर सके हैं जिसका सीधा असर टीम पर पड़ा है। उनसे एक दमदार पारी की उम्मीद होगी। देखना है कि मनीष पांडे को उतारा जाता है या नहीं जो एडम जाम्पा की गेंदें नहीं खेल पा रहे थे। इसके बाद भारत की रनगति धीमी हो गई थी। संजू सैमसन और हार्दिक पंड्या का काम आखिरी छह ओवर का फायदा उठाना है लेकिन सैमसन अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में प्रभावित नहीं कर सके हैं।

दोनों टीमें इस प्रकार हैं

भारत: विराट कोहली (कप्तान), शिखर धवन, मयंक अग्रवाल, केएल राहुल, श्रेयस अय्यर, मनीष पांडे, हार्दिक पंड्या, संजू सैमसन, वाशिंगटन सुंदर, युजवेंद्र चहल, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद शमी, नवदीप सैनी, दीपक चाहर, टी नटराजन , शार्दुल ठाकुर।

ऑस्ट्रेलिया: आरोन फिंच (कप्तान), सीन एबोट, एश्टोन एगर, एलेक्स कारे, कैमरन ग्रीन, जोश हेजलवुड, मोइजेस हेनरिक्स, मार्नस लाबुशेन, ग्लेन मैक्सवेल, डेनियल सैम्स, केन रिचर्डसन, स्टीवन स्मिथ, मिशेल स्टार्क, मार्कस स्टोइनिस, मैथ्यू वेड, डार्सी शॉर्ट, एडम जाम्पा।

रितु फोगट ने एमएमए चैम्पियनशिप खिताब जीता

नई दिल्ली। भारतीय पहलवान-मिक्स्ड मार्शल आर्टस फाइटर रितु फोगट ने सिंगापुर में अपना लगातार चौथा एमएमए चैम्पियनशिप खिताब जीत लिया है। 26 वर्षीय भारतीय ने वन चैंपियनशिप (वन) के एक दौर में तकनीकी नाकआउट के माध्यम से फिलीपींस के जोमरी टोरेस को हराया। अब तक मुझ पर विश्वास करने और अपनी पूरी यात्रा में मेरा समर्थन करने के लिए मैं अपने कोच, अपनी टीम, अपनी टीम, अपने देश को धन्यवाद करना चाहती हूं। यह टीम का प्रवास है और मैं अपने जनों का आनंद ले रही हूं। मैं उसी गति को 2021 तक ले जाने का वादा करती हूं।

हीरो महिला प्रो गोल्फ टूर का सातवां चरण गोल्फर स्नेहा सिंह के नाम

नोएडा। अमेच्योर गोल्फर स्नेहा सिंह ने नोएडा गोल्फ कोर्स पर हीरो महिला प्रो गोल्फ टूर का सातवां चरण अपने नाम किया। कोविड-19 के कारण नौ महीनों के बाद महिला प्रो गोल्फ टूर के चरण का आयोजन किया जा रहा है। स्नेहा ने 2019 में हीरो महिला प्रो गोल्फ टूर खिताब जीता था। उन्होंने मुश्किल शुरूआत से उबरकर तीसरे और अंतिम दौर में 74 का कार्ड खेला,इसमें उनका कुल स्कोर एक ओवर 217 रहा। इस तरह उन्होंने चार शॉट के अंतर से जीत हासिल की। एक अन्य प्रतिभाशाली गोल्फर हुनर मित्तल और अमनदीप ढाल संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर रहीं। दोनों का कुल स्कोर पांच ओवर 221 रहा।

जडेजा के विकल्प युजवेंद्र चहल के बनने पर मोइजेस हेनरिक्स ने उठाए सवाल

कैनबरा ■ एजेंसी

आस्ट्रेलियाई हरफनमौला मोइजेस हेनरिक्स ने सवाल किया, कि क्या लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल को हरफनमौला रविंद्र जडेजा के कनकशन विकल्प बताया जा सकता है, जिन्होंने भारत को टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में 11 रन से जीत दिलाने में अहम भूमिका अदा की। चहल ने 25 रन देकर तीन विकेट हासिल किए। जिसमें आस्ट्रेलियाई टीम 162 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए सात विकेट पर 150 रन ही बना सकी। हेनरिक्स ने कहा कि इसमें कोई शक नहीं कि जडेजा को हेलमेट पर गेंद लगी थी और उनके सिर में चोट लगी होगी।

एक फैसला किया गया क्योंकि उनके सिर पर चोट लगी थी और उनका विकल्प लाया गया। हमें इसमें कोई शक नहीं है। लेकिन क्या यह खिलाड़ी के समान का विकल्प था? यह सवाल है। जडेजा एक हरफनमौला है, वह अपनी बल्लेबाजी कर चुके थे। चहल पूरी तरह से गेंदबाज हैं। मोइजेस हेनरिक्स ने हालांकि स्पष्ट किया कि वह न तो अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के कनकशन विकल्प नियम पर सवाल उठा रहे हैं और न ही भारत के विकल्प मांगने के अधिकार पर।

उन्होंने कहा कि आईसीसी का नियम ठीक है, कनकशन विकल्प होना चाहिए। हम विकल्प लाने के फैसले के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। हम सिर्फ एक चीज कह रहे हैं कि विकल्प उसी खिलाड़ी की तरह होना चाहिए। यह पूछने पर कि विकल्प नियम के लिए और अधिक स्पष्टता होनी चाहिए या नहीं तो मैं नहीं जानता कि कैसे विकल्प लाने का फैसला लिया जाता है, मैं इन चीजों में शामिल नहीं हूं।

यूजर्स को ऐपल आईफोन ने दी बड़ी फ्री बड़ी सेवा!

नई दिल्ली ■ ब्यूरो

दुनिया की सबसे मशहूर मोबाइल फोन ऐपल आईफोन 11 को इस्तेमाल कर रहे हैं और इसके डिस्प्ले में परेशानी आ रही है तो आपके लिए अच्छी खबर है। ऐपल ने ऑफिशियली आईफोन 11 के रिपेयर प्रोग्राम का ऐलान कर दिया है। कंपनी के ऑफिशियल सपोर्ट पेज पर कहा गया है, ह्यऐपल ने पाया है कि कुछ आईफोन 11 के डिस्प्ले मॉड्यूल में परेशानी की वजह से टच काम करना बंद कर दे रहा है।ह्न ऐपल ने साफ कर दिया है कि प्रभावित आईफोन 11 नवंबर 2019 से मई 2020 के बीच मैन्युफक्चर किए गए हैं। अगर आपके आईफोन 11 में भी ऐसी कोई समस्या आ रही है तो आप ऐपल सपोर्ट वेबसाइट पेज पर पाएं।

एक बार वेबसाइट पर जाने के बाद आईफोन 11 डिसप्ले रिपेयर पेज पर जाएं। यहां आपको सीरियल नंबर

में आईफोन 11 के केईवाई डालनी होगी, जिससे आप ये चेक कर सकते हैं कि आपकी डिवाइस प्रभावित होने वाले फोन के कैटेगरी में आती है या नहीं। ऐपल प्रभावित आईफोन 11 को फ्री में रिप्लेस करेगा।

इसके अलावा अगर आपको लगता है कि आपके आईफोन 11 में यही समस्या है, और आपने डिवाइस रिपेयर करने के लिए पेमेंट किया है तो ऐपल आपको रिपेयर की कास्ट रिफंड कर देगा। ऐपल आईफोन 11 में 6.1 का इंच लिक्विड रेटिना एलसीडी पैनल दिया गया है। ये डोल्बे एटमस के साथ सेप्टल ऑडियो को सपोर्ट करता है। इसे ऐपल के ए13 बायोनिक चिप से पावर मिलती है जो किसी भी स्मार्टफोन पर लगा सबसे तेज प्रोसेसर है। कैमरे की बात करें तो इसकी यूनिट में दो 12 मेगापिक्सल का कैमरा हैं जो वाइड और अल्ट्रा वाइड शॉट लेने में सक्षम हैं। सेल्फी के लिए इस आईफोन में फेस आईडी के साथ 12 मेगापिक्सल का ट्रूडेप्थ फ्रंट कैमरा दिया गया है।

त्यौहारों पर ई-वाणिज्य ऑर्डरों की संख्या 56 प्रतिशत बढ़ी: रिपोर्ट

नई दिल्ली। ई-वाणिज्य उद्योग को इस त्यौहारी मौसम में पिछले साल के मुकाबले 56 प्रतिशत अधिक ऑर्डर प्राप्त हुए। वहीं उनके मंच पर बिके सामानों का सकल मूल्य (जीएमवी) में भी पिछले साल के इसी मौसम के मुकाबले 50 प्रतिशत तक की वृद्धि दर्ज की गई। यूनिकॉमर्स की एक रिपोर्ट में यह कहा गया है। ई-वाणिज्य पर ध्यान देने वाले यूनिकॉमर्स प्लेटफार्म ने वर्ष 2019 और 2020 के त्यौहारी मौसम की खरीदारी का विश्लेषण किया है। इसमें दिवाली से 30 दिन पहले दिए गए 4.40 करोड़ ऑर्डर के नमूने का आकलन किया गया। त्यौहारी मौसम के दौरान ईवाणिज्य उद्योग में ऑर्डर की संख्या में पिछले साल के इसी मौसम के मुकाबले करीब 56 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।

अर्थशास्त्री अभिजित सेन ने कहा, गिरावट 7.5 प्रतिशत तक सीमित नहीं रहकर ज्यादा रहेगी

नई दिल्ली ■ ब्यूरो

योजना आयोग के पूर्व सदस्य और अर्थशास्त्री अभिजित सेन ने कहा कि चालू वित्त वर्ष में भारतीय अर्थव्यवस्था में दस प्रतिशत के आसपास संकुचन रह सकता है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार के लिए किसानों की आय 2022 तक दो गुना करने का लक्ष्य सिद्ध कर पाना कठिन होगा। सेन ने कहा, हम इस साल (2020-21) में दस प्रतिशत की गिरावट की ओर बढ़ रहे हैं। निश्चित रूप से गिरावट 7.5 प्रतिशत तक सीमित नहीं रहकर इससे ज्यादा खराब ही रहेगी।" उन्होंने अगले वित्त वर्ष में आर्थिक गतिविधियों में

विस्तार की बात को कुछ लोगों की खुशफहमी बताया।

सेन का कहना है, लोग उम्मीद कर रहे हैं कि अगले साल उछाल आएगा। मुझे इस पर शक है। दरअसल आरबीआई ने शुक्रवार को जारी समीक्षा रिपोर्ट में चालू वित्त वर्ष में 7.5 प्रतिशत के संकुचन का अनुमान जताया है, जो अक्टूबर के उसके अपनुमान से कम है। अक्टूबर में संकुचन 9.5 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया गया था। सेन ने कहा कि सरकार बजट अनुमान से कम खर्च कर रही है। सरकार बिना कुछ करें तेजी की उम्मीद कर रह रही है। वर्तमान किसान आंदोलन के बारे में उन्होंने कहा कि यह सरकार और किसानों के दृष्टिकोण में अंतर को दशार्ता है। उन्होंने कहा कि सरकार की तरह से मुख्य गलती यह हुई है कि इन कानूनों के मामले में बहुत जल्दबाजी की।

जीएसटी मुआवजे पर गतिरोध समाप्त

नई दिल्ली। जीएसटी मुआवजे को लेकर केंद्र और राज्यों के बीच लंबे समय से चला आ रहा गतिरोध समाप्त हो गया है। जीएसटी क्षतिपूर्ति में भरपाई के लिए सभी राज्यों ने 1.1 लाख करोड़ रुपए का विकल्प स्वीकार कर लिया है। वित्त मंत्रालय ने यह जानकारी दी। झारखंड के यह विकल्प अपनाने के बाद अब केंद्र और राज्यों के बीच यह मामला सुलझ गया है। झारखंड को स्पेशन बोरो विंग विंडो के जरिए 1,689 करोड़ रुपए मिलेंगे। साथ ही उसे राज्य की जीडीपी का 0.5 फीसदी तक उधार लेने की अनुमति होगी।

साप्ताहिक समीक्षा

सेंसेक्स 446.90 अंकों की उछाल के साथ बंद, निफ्टी 124.65 अंकों की बढ़त के साथ 3,258.55 पर बंद

सप्ताह भर शेयर बाजार में तेजी रही

नई दिल्ली ■ ब्यूरो

मुंबई (ईएमएस)। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा रेपो रेट में बदलाव नहीं करने के फैसले से शुक्रवार के कारोबारी दिन शेयर बाजार में जबरदस्त रौनक रही। बैंक, ऑटो और रियल्टी कंपनियों के शेयरों ने ऐसी तेजी पकड़ी कि सेंसेक्स और निफ्टी ने बढ़त के साथ बंद हुए। पिछले सप्ताह शेयर बाजार में पांच कारोबारी दिनों में से केवल चार दिन कारोबार हुआ, क्योंकि सप्ताह के पहले दिन सोमवार को गुरुनानक जयंती के अवसर पर शेयर बाजार में कारोबार नहीं हुआ। बाकी के कारोबारी दिनों पर नजर डालें तो मंगलवार को बीएसई का 30 शेयरों वाला सूचकांक सेंसेक्स करीब 35.78 अंक की तेजी के साथ 44185.50 पर खुला और 505.72 अंक ऊपर चढ़कर 44,655.44 के रिकॉर्ड हाई पर बंद हुआ। वहीं नेशनल स्टाक एक्सचेंज का निफ्टी

14.50 अंक की तेजी के साथ 12983.50 अंक के स्तर पर खुला और 140.10 अंक ऊपर चढ़कर पहली बार 13,109.05 के रिकॉर्ड स्तर पर बंद हुआ। बुधवार को सेंसेक्स 25 अंकों की कमजोरी के साथ 44,630 पर खुला और 37.40 अंकों की गिरावट के साथ 44,618.04 पर बंद हुआ। निफ्टी 8 अंक की मामूली बढ़त के साथ 13,115 पर खुला और 4.70 अंकों की बढ़त के साथ 13,113.75 पर बंद हुआ। गुरुवार को सेंसेक्स 176.87 अंक बढ़कर 44,794.91 पर खुला और 14.61 अंक की बढ़त के साथ 44,632.65 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी 59.05 अंक की बढ़त के साथ 13,172.80 पर खुला और 20.15 अंक की तेजी के साथ 13,133.90 अंक पर बंद हुआ। शुक्रवार को सेंसेक्स 202.71 अंक मजबूत होकर 44,835.36 पर खुला और 446.90 अंकों की उछाल के साथ 45,079.55 पर बंद हुआ। निफ्टी भी 66.10 अंक की तेजी के साथ 13,200 अंक पर खुला और 124.65 अंकों की बढ़त के साथ 3,258.55 पर बंद हुआ।

देश का विदेशी मुद्रा भंडा 46 करोड़ डॉलर घटकर 574.821 अरब डॉलर

मुंबई। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 27 नवंबर को समाप्त सप्ताह में 46.9 करोड़ डॉलर घटकर 574.821 अरब डॉलर रह गया। इससे पिछले 20 नवंबर को समाप्त सप्ताह में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 2.518 अरब डॉलर की भारी वृद्धि के साथ 575.29 अरब डॉलर हो गया था। समीक्षाधीन अवधि में विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियों (एफसीए) में भारी वृद्धि के बावजूद विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट रही। विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां, कुल विदेशी मुद्रा भंडार का अहम हिस्सा होती है। रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार समीक्षावधि में एफसीए 35.2 करोड़ डॉलर बढ़कर 533.455 अरब डॉलर हो गई। समीक्षाधीन सप्ताह के दौरान देश का स्वर्ण भंडार का मूल्य 82.2 करोड़ डॉलर घटकर 35.192 अरब डॉलर रह गया। देश को अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) में मिला विशेष आहरण अधिकार 20 लाख डॉलर की मामूली वृद्धि के साथ 1.494 अरब डॉलर और आईएमएफ के पास जमा मुद्रा भंडार 10 लाख डॉलर घटकर 4.679 अरब डॉलर रह गया। विदेशी मुद्रा भंडार देश के केंद्रीय बैंकों द्वारा रखी गई धनराशि या अन्य परिसंपत्तियां होती हैं।

विधायक डॉ.सिकरवार ने कन्या विवाह के लिये दी आर्थिक सहायता

ग्वालियर। गरीबों की मदद करने वाली षहर की सक्रिय सामाजिक संस्था जन उत्थान न्यास की ओर से 16 गरीब परिवारों को कन्या विवाह के लिए आर्थिक सहायता न्यास के अध्यक्ष एवं विधायक डॉ. सतीष सिंह सिकरवार ने आज न्यास कार्यालय ललितपुर कॉलोनी में भेंट की। विधायक एवं जन उत्थान न्यास के अध्यक्ष डॉ. सतीष सिंह सिकरवार ने आज ललितपुर कॉलोनी कार्यालय में वीरू आदिवासी निवासी आदिवासी मौहल्ला भीमनगर मुरार, अब्दुल अयूब निवासी ग्राम सिगोरा पोस्ट मोतीझील, रामबाबू झा निवासी लुढकन बाबा मंदिर के पास चन्द्रनगर कोटेष्वर मंदिर के पीछे, मदन कुषवाह निवासी गली नं.1 नाकाचन्द्रवदनी, अमर सिंह करपरिया निवासी बजरंग नगर नाकाचन्द्रवदनी, द्वारिका सोलंकी निवासी भीमनगर खाज भराई माता धर्मषाला नं.2 मुरार, आषाराम जम्हौरिया निवासी हरनामपुरा बजरिया संतोशी माता मंदिर ठाठीपुर, श्रीमती माया देवी मौर्य निवासी बड़वारी मौहल्ला कबीर आश्रम के पास नदी पार टाल मुरार, रमेष पाल मोहनीया निवासी नाकाचन्द्रवदनी बडे पुल के पास सत्यनारायण मंदिर के सामने, षाहरूख खान निवासी महलगॉव करौली वाली माता गली नं.3 सिटी सेन्टर, सोहनलाल वर्मा निवासी पिन्टू पार्क जडेरूआ रोड जाटव धर्मषाला के पास मुरार, सियाराम षाक्यवार निवासी सिंधिया नगर मल्टी के बगल से नीडम के पास, मुरली पाल निवासी राजीव नगर सुरेष नगर के पास ठाठीपुर, श्रीमती सुषीला बाथम निवासी तृप्ती नगर नेहरू हाई स्कूल के सामने नदी पार टाल मुरार, श्रीमती सुनीता बाथम निवासी गेरू वाला बंगला मुरार, पूरन खरे निवासी श्रीनगर कॉलोनी नदी पार टाल को आर्थिक सहायता प्रदान की। इन सभी परिवारों में आगामी दिनों में कन्याओं का विवाह है, ये सभी परिवार आर्थिक रूप से कमजोर है। आज विधायक डॉ. सिकरवार ने इन सभी परिवारों को ललितपुर कॉलोनी न्यास कार्यालय में बुलाया और सहायता राषि प्रदान की। डॉ. सिकरवार ने इन परिवारों को सहायता राषि भेंट करते हुये भरोसा दिलाया कि आपका भाई आपकी सेवा के लिए जीवन भर सम्पिंत रहेगा। इन 16 परिवारों ने डॉ. सिकरवार का धन्यवाद ज्ञापित करते हुये उनका स्वागत किया। बाबा साहब की पुण्यतिथि पर पुश्प अर्पित किये:-ग्वालियर पूर्व से कॉग्रेस विधायक डॉ. सतीष सिंह सिकरवार ने आज ललितपुर कॉलोनी कॉग्रेस कार्यालय में संविधान निर्माता बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की छायाचित्र पर पुश्प अर्पित कर पुण्यतिथि मनाई। इस अवसर पर डॉ. सिकरवार ने कहा कि बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर कई प्रतिभाओं के व्यक्ति थे, वे राजनीतिज्ञ, न्यायविद, अर्थषास्त्री और समाज सुधारक थे। जिन्होने दलित समुदाय के अधिकारों के लिए लड़ाई लडी थी। डॉ. सिकरवार ने कहा कि बाबा साहब उस समय भारतीय समाज में व्याप्त अन्याय से लड़ने के लिए भावुक थे। डॉ. सिकरवार ने कहा कि बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी का मानना था कि आजादी का मतलब सिर्फ अधिकार पान भर नहीं है, इस हमारे संविधान में सरकार और नागरिकों के अधिकारों के साथ ही उनके कर्तव्यों का भी विस्तार से उल्लेख किया गया है। इस अवसर पर डॉ. सिकरवार के साथ अवधेष कौरव, ब्लॉक अध्यक्ष राकेष गुर्जर, के.के. षर्मा, महेष कुषवाह, अनूप षिवहरे, धीरेन्द्र जाटव, आजम खान, मानसिंह परिहार, षंकर गावरा, आषीश साहू, प्रेमसिंह तोमर, अभयकुमार सिंह, राजेन्द्र राठी, कौषलेष सिंह कुषवाह, भुवनेष सारस्वत, हिमांषु कीकन, देवेन्द्र भदौरिया आदि मौजूद रहे।

मेला 10 जनवरी से ही लगे, आज मेला प्राधिकरण पर धरना देंगे मेला व्यापारी

मेला प्राधिकरण के सचिव को सांसद सिंधिया के नाम दिया जाएगा ज्ञापन

ग्वालियर। ग्वालियर व्यापार मेला 10 जनवरी से लगाए जाने, मेला अवधि 50 दिन की करने एवं आरटीओ शुल्क में 50 फीसदी छूट देने की मांग को लेकर श्रीमंत माधवराव सिँधिया ग्वालियर व्यापार मेला व्यापारी संघ द्वारा आगामी सोमवार 7 दिसंबर को दोपहर 1 से 3 बजे तक ग्वालियर व्यापार मेला प्राधिकरण के कार्यालय पर धरना दिया जाएगा एवं मेला प्राधिकरण के सचिव श्री पीसी वर्मा को भारत सरकार के पूर्व केंद्रीय मंत्री और वर्तमान राज्यसभा सदस्य ज्योतिरादित्य सिंधिया के नाम ज्ञापन पत्र भेंट किया जाएगा।

ग्वालियर व्यापार मेला संघ का कहना है कि अब कोरोना संक्रमण कम हो चुका है सिर्फ कोरोना का बहाना बनाकर ग्वालियर व्यापार मेला को स्थगित या टाला नही जा सकता है कोरोना से सैलानियों एवं दुकानदारों के बचाव के लिए मेला व्यापारी संघ सेनेटाइजेशन, मास्क, एवं सोशल डिस्टेंसिंग जैसे अनिवार्य इंतजाम खुद करने करने के लिए प्रतिबद्ध है इसलिए प्रशासन को चिंतित होने की जरूरत नही है। ग्वालियर व्यापार मेला संघ के अध्यक्ष महेंद्र भदकारिया, सचिव महेश मुदल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष व प्रवक्ता अनिल पुनियानी, उमेश उप्पल, अरूण केन, कल्ली पंडित, सुरेश हिरयानी, अनुज सिंह, बब्बन सेंगर सहित मेला व्यापारी संघ के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने म.प्र. शासन एवं मेला प्राधिकरण से आग्रह किया है कि श्रीमंत माधवराव सिंधिया ग्वालियर व्यापार मेला वर्ष 2020-21 के आयोजन को प्रति वर्षानुसार इस वर्ष भी कोरोना की पूर्ण एहतियात के साथ निर्विघ्न ढंग

से आयोजित किया जाए एवं इस हेतु तत्काल तैयारियां प्रारंभ की जाएं। मेला व्यापारी संघ की मांग है कि ग्वालियर व्यापार मेला हर स्थिति में 10 जनवरी से ही लगाया जाए और यह 50 दिन से कम का नही होना चाहिए। म.प्र.शासन द्वारा वर्ष 2019 में ग्वालियर व्यापार मेला में बिकने वाले वाहनों के रजिस्ट्रेशन शुल्क में 50 प्रतिशत की छूट इस वर्ष भी दी जाए। मेला व्यापारी संघ ने कहा है कि श्रीमंत माधवराव सिँधिया ग्वालियर व्यापार मेला, महान सिँधिया राजवंश द्वारा प्रारंभ किया गया 114 वर्ष पुराना व्यापार मेला है जो प्रतिवर्ष दिसंबर माह से प्रारंभ होकर फरवरी तक चलता है। स्व. माधवराव सिंधिया ने ग्वालियर मेला को राज्यस्तरीय दर्जा दिलाते हुए प्रथम बार सैल्स टैक्स में 50 प्रतिशत रियायत दिलाई तो उनके बाद ज्योतिरादित्य सिंधिया ने ग्वालियर मेले को उत्कर्ष पर पहुचाने के लिए प्रयास किए। ग्वालियर मेले में में न सिर्फ ग्वालियर-चंबल बल्कि म.प्र. व देशभर के लगभग तीन हजार छोटे बडे कारोबारी भाग लेते है। और ग्वालियर चंबल संभाग के साथ साथ म.प्र. के दूरस्थ क्षेत्रों के लोग इसे देखने आते है। इस वर्ष ग्वालियर मेला को स्थगित या विलंबित कर ग्वालियर की इस शानदार परंपरा में कोई अवरोध उत्पन्न न किया जाए। मेला लगाए जाने पर मेला व्यापारी संघ कोरोना से बचाव के लिए हर ऐहतियाती उपाय करने के लिए संकल्पित है उन्होने सभी मेला व्यापारियों एवं ग्वालियर के अन्य व्यापारियों से भी सोमवार 7 दिसंबर को मेला प्राधिकरण के दफ्तर पर दिए जा रहे धरने में शामिल होने का आग्रह किया है।

पैरा साईकलिंग अभियान इनफिनिटी राईड 2020 बीएसएफ टेकनपुर में आया

ग्वालियर। सीमा सुरक्षा बल दिव्यांगों के सशक्तिकरण के लिये सदा सजग

और प्रयत्नशील रहा है। अपनी इस सोच और संगठनात्मक ध्येयपूर्ति हेतु कश्मीर से कन्याकुमारी तक की 3801 किलोमीटर की पैरा साईकलिंग अभियान ÷इनफिनिटी राई-2020 का आयोजन सीमा सुरक्षा बल द्वारा आदित्य मेहता फाउण्डेशन के सहयोग से कराया जा रहा है। बल के परिचालन अपंगों ÷दिव्यांग योद्धाओं÷ और सिविल के उत्साही दिव्यांगों के मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण के उद्देश्य से आयोजित यह अभियान 19 नवम्बर को डल लेक, श्रीनगर से शुरू होकर 31 दिसम्बर को कन्याकुमारी में समाप्त होगा। भारत के अग्रणी पैरा साईकलिस्ट आदित्य मेहता द्वारा शुरू किए गए इस वार्षिक अभियान से दिव्यांगों के प्रति जागरूकता और नई प्रतिभाओं की खोज में खासी मदद मिली है और निसन्देह सीमा सुरक्षा बल और आदित्य मेहता फाउण्डेशन का यह संयुक्त प्रयास काफी सराहनीय रहा है। सालाना आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम की कड़ी में यह छठा आयोजन है। गत 19 नवम्बर से शुरू हुई 17 दिनों की अपनी इस यात्रा में पैरा साइकलिस्टों ने अपने अदम्य जीवट का परिचय देकर जम्मू-कश्मीर, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, राजस्थान आदि राज्यों से होकर 4 दिसम्बर 2020 को मध्यप्रदेश की सीमाओं में प्रवेश किया। दल के नायक श्री मनोज पन्यूली द्वितीय कमान अधिकारी हैं। सीमा सुरक्षा बल के अनुसार 30 साईकलिस्टों के दल ने 6 दिसम्बर 2020 को सीमा सुरक्षा बल अकादमी टेकनपुर से अपनी आगे की यात्रा प्रारंभ की।

निर्वाचन व्यय प्रेक्षक की मौजूदगी में हुई व्यय अनुवीक्षण समिति की बैठक

ग्वालियर। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जिले में हुए उप चुनाव के दौरान निर्वाचन व्यय पर निगरानी रखने के लिये नियुक्त व्यय प्रेक्षक श्री संजय कुमार सिंह की मौजूदगी में आयोजित हुई जिला व्यय अनुवीक्षण समिति की बैठक में प्रत्याशियों की समस्याओं का निराकरण किया गया। यह बैठक रविवार को यहाँ कलेक्ट्रेट के सभागार में आयोजित हुई। संयुक्त संचालक कोष एवं लेखा सह नोडल अधिकारी निर्वाचन व्यय श्री योगेन्द्र कुमार सक्सेना ने बताया कि इस समाधान बैठक के माध्यम से प्रत्याशियों के निर्वाचन व्यय लेखा दाखिल करने में आ रही कठिनाईयों का निराकरण किया गया।

“आओ अपना दिन फिटनस के डोज के साथ शुरू करें”

साइकल रेली द्वारा फिट इंडिया अभियान

(आधा घण्टा रोज फिटनस के डोज के साथ फिट इंडिया सप्ताह राष्ट्रीय सेवा योजना माधव महाविद्यालय द्वारा साइकल रेली)

ग्वालियर। मनुष्य को अपने जीवन को सुरक्षित रखने के लिये कुछ करना चाहिये जिससे हमारा जीवन सुरक्षित रह सके। भारत सरकार युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा फीटनस के प्रति जागरूकता के लिये सप्ताह मनाया जा रहा है जिसमें साइकल चलाने से बढ़िया व्यायाम कोई नही हो सकता साइकल हमारे जीवन में काफी बदलाव लाती है। ''आओ अपना दिन फिटनस के डोज के साथ शुरू करें'' फीट इंडिया प्रभात फेरी साइकल रेली द्वारा वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी डॉ. संजय कुमार पाण्डेय राष्ट्रीय सेवा योजना माधव महाविद्यालय के नेतृत्व में निकाली गई ।

डॉ. पाण्डेय ने बताया कि हम फिट इंडिया प्रभात फेरी में कई प्रकार के कार्य कर सकते है जिसको साइकल रैली काफी अहम माना गया भारत सरकार युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा फिटनस का डोज आधा घण्टा रोज प्रभात फेरी स्वयंसेवको द्वारा सप्ताह भर अलग-अलग तरीके के कार्यक्रम करके मनाई जा रही है। स्वस्थ्य शरीरी किसी भी प्रकार की बिमारी से लढ़ सकती है जिसके लिये हमें अपनी फिटनस सही रखना चाहिए। कोविड-19 के समय रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिये निशुल्क साइकल चलाकर हम अपने आपको चुस्त व तंदुरस्त रख सकते है जो कोविड-19 के समय काफी सहायक सिद्ध होगा। स्वस्थ्य दिमाग श्रेष्ठ भारत की परिकल्पना को सार्थक कर सकता है। हमें अपनी कार्यक्षमता में वृद्धि के लिये भी फिटनस आवश्यक है। कार्यक्रम में अंकुर चौरसिया, हेमंत माझी, तरूण रोहिरा, यश किरार, आदित्य अठाले करण बरूआ अनुभव दीक्षित आदि लोग उपस्थित थे।

विश्व स्वैच्छिक सेवा दिवस के उपलक्ष्य में आनंदम संस्थान द्वारा कार्यक्रम आयोजित

अपर कलेक्टर श्री तिवारी की मौजूदगी में हुआ आयोजन

ग्वालियर। विश्व स्वैच्छिक सेवा दिवस के उपलक्ष्य में सम्पूर्ण प्रदेश के साथ ग्वालियर जिले में भी राज्य आनंद संस्थान द्वारा कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस कड़ी में अपर कलेक्टर एवं नोडल अधिकारी आनंद संस्थान श्री आशीष तिवारी की मौजूदगी में यहाँ विवेकानंद नीडम परिसर में कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्री तिवारी ने इस अवसर पर बच्चों के प्रश्नों के प्रेरणादायक जवाब दिए। उन्होंने बच्चों से कहा शासकीय स्कूल में पढ़कर भी उच्च पदों पर पहुँचा जा सकता है। उन्होंने इस अवसर पर बच्चों का आह्वान किया कि वे स्वयं मास्क लगाएँ, सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें और नियमित रूप से हाथ धोते रहें। साथ ही अपने अभिभावकों से भी कोरोना गाइडलाइन का पालन करने का आग्रह करें। अपर कलेक्टर श्री तिवारी ने इस अवसर पर विवेकानंद नीडम परिसर का भ्रमण किया। उन्होंने कहा बौद्धिक विकास एवं अवसाद से दूर रखने के लिये आनंदम संस्थान की गतिविधियां विशेष रूप से उपयोगी हैं। इस अवसर पर सर्वश्री अनिल सरोदे, ए के शर्मा, पवन दीक्षित, विजय उपमन्यु, डॉ. मनीष शर्मा, सुरेश कुमार कदम, जगदीश प्रसाद सिंघल, अरूणाचल विश्वकर्मा, प्रथम चतुर्वेदी, आनंद कुशवाह व मनीष शर्मा सहित अन्य आनंदम सहयोगी मौजूद थे। आनंदम संस्थान के जिला समन्वयक श्री ए के शर्मा ने बताया कि जिले में जन सहयोग से समाजसेवियों द्वारा बच्चों के बौद्धिक विकास के लिये पाँच केन्द्र संचालित किए जा रहे हैं।

राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार श्री कुशवाह ने किया खादी मेले का शुभारंभ

ग्वालियर। उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री भारत सिंह कुशवाह ने रविवार की शाम खादी एवं ग्रामोद्योग एक्सपो 2020 (खादी मेला) का दीप प्रज्ज्वलन कर शुभारंभ किया। उन्होंने इस अवसर पर कहा इस प्रकार के मेलों से खादी सहित हाथ से बने अन्य उत्पादों को बढ़ावा मिलता है। ग्वालियरवासी इस मेले का लाभ उठाकर देश के विभिन्न हिसों में बनने वाले एक से बढ़कर एक खादी के वस्त्र, गर्म कपड़े एवं अन्य कलात्मक उत्पाद सस्ती दर पर प्राप्त कर सकते हैं। श्री कुशवाह ने खादी मेला आयोजित करने के लिये मध्य भारत खादी संघ की सराहना की। उन्होंने कहा मध्य भारत खादी संघ द्वारा दुकानदारों के लिये बेहतर सुविधायें मुहैया कराई गई हैं। श्री कुशवाह ने शहरवासियों से अपील की है कि मेला में मास्क लगाकर आएं और सोशल डिस्टेसिंग का पालन भी करें। उन्होंने खादी मेला के विभिन्न स्टॉलों का जायजा लिया। साथ ही खरीददारी भी की। यहाँ वीरांगना लक्ष्मीबाई समाधि के सामने फूलबाग मैदान पर लगे खादी मेले में देश के 17 प्रांतों के हस्तशिल्प कलाकार एक से बढ़कर एक वस्त्र एवं कलात्मक उत्पाद लेकर आए हैं। इनमें जम्मू-कश्मीर, पंजाब, हरियाणा, पश्चिम बंगाल, गुजरात, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, कर्नाटक एवं मध्यप्रदेश शामिल हैं। खादी मेले में कश्मीर की पसमीना

शॉल व विश्व विख्यात फेरन शॉल से लेकर अत्यंत आकर्षक गर्म कपड़े, सदरी, जैकेट, महिलाओं के गर्म परिधान, सहारनपुर के फर्नीचर इत्यादि विशेष छूट के साथ उपलब्ध हैं। खादी और गर्म कपड़ों के साथ यहां फैशन ज्वैलरी की लेटेस्ट और कालीन की श्रृंखला मौजूद हैं। खानपान के शौकीनों के लिए अमेरिकन भुट्टा, तंदूरी चाय, मूंगफली चाट, मुंबईया भेलपुरी, अचार, पापड़ सहित अनेक प्रकार के उत्पाद भी सैलानियों के लिये उपलब्ध हैं।

मध्य भारत खादी संघ के अध्यक्ष श्री वासुदेव शर्मा ने बताया कि खादी मेला 31 जनवरी तक प्रतिदिन दोपहर 12 बजे से रात्रि 8 बजे तक सैलानियों के लिये खुला रहेगा। खादी मेला के शुभारंभ अवसर पर मध्य भारत खादी संघ के अध्यक्ष श्री वासुदेव शर्मा व सचिव श्री रमाकांत शर्मा, उपाध्यक्ष श्री यतीन्द्र मिश्रा व श्री रमेश नायक सहित संस्था के अन्य पदाधिकारी मौजूद थे।

राष्ट्रध्वज निर्माण करने वाली देश की अग्रणी संस्था है मध्य भारत खादी संघ–खादी मेले का आयोजन कर रही संस्था मध्य भारत खादी संघ राष्ट्रीय ध्वज बनाने वाली देश की अग्रणी संस्था है। हुबली एवं मुम्बई की संस्था के बाद मध्य भारत खादी संघ का नाम आता है। पिछले साल इस संस्था द्वारा 90 लाख रूपए के राष्ट्रीय ध्वज की बिक्री की गई थी। इस साल भी कोरोना संकट के बाबजूद संस्था द्वारा अब तक 32 लाख रूपए के राष्ट्रीय ध्वज विक्रय किए जा चुके हैं। संस्था के अध्यक्ष श्री वासुदेव शर्मा ने बताया कि मध्य भारत खादी संघ का गठन सन् 1924 में गाँधी जी द्वारा चलाए गए चरखा आंदोलन से प्रेरित होकर किया गया था।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक, एवं संपादक भरत सिंह चौहान। पुष्पांजली प्रिंटर्स गोवर्धन कॉलोनी, भिण्ड रोड, गोला का मंदिर, जिला ग्वालियर (म.प्र.) से मुद्रित एवं दीपू इलेक्ट्रॉनिक्स, पंजीयन क्रमांक/ एम.पी.एच.आई.एन. /31130 निगर हनुमान मंदिर, गोवर्धन कॉलोनी, भिण्ड रोड, गोला का मंदिर, ग्वालियर (म.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक - भरत सिंह चौहान E-mail : pushpanjalitoday17@gmail.com 0751-4901333, M.: 8269307478